

p7



1962 से 2020 तक चीन ने
धोखा देने की अपनी नीति

..... इंडियाज़ फास्टेस्ट ग्रोइंग न्यूज़ पेपर.....

इंसान को क्यों मरना पड़ता है
दुनिया को अपनी कीमत बताने के लिए



p11

सेन्सर टाइम्स

www.censortimes.com

डाक पंजीयन क्रमांक-एमपी/आईडीसी/1117/2019-2021

वर्ष-17

अंक-4

मासिक

1 जुलाई 2020

पृष्ठ-12

मूल्य- पाँच रुपये

चीनी सामान का बहिष्कार



p4

संघ को विवाद में घसीटना कांग्रेस का
पुराना शौक है

p6



राजीव गांधी फाउंडेशन को चीन से मिले तीन लाख
अमेरिकी डॉलर-नइ

p12



अन्दर के पृष्ठ पर.....

भाई-भाई कह कर
धोखा देने वाला देश है चीन

P-2

कोरोना काल में राज्यों में शिक्षा प्रदान करने
के बदले स्वरूप पर एक नजर

P-3

हिन्दुस्तान से हांगकांग तक चीन का जाल ,
मोदी के आगे एक नहीं चली

P-7

चीन मुद्दे पर हम मोदी सरकार के
साथ -मायावती

P-12

सम्पादक की कलम से

चीन से बढ़ते तनाव के बीच भारत सरकार ने एक ऐतिहासिक कदम उठाते हुए टिकटॉक, यूसी ब्राउजर और शेयरइट जैसे कई चीनी एप को भारत में बैन कर दिए। इस संबंध में सरकार ने बताया कि इन सभी एप के जरिये यूजर्स की जानकारी आसानी से प्राप्त की जा सकती है। चीन के ये सभी एप देश की सुरक्षा, संप्राप्ता और अखंडता के लिए खतरा हैं। सूचना मंत्रालय ने आईटी एक्ट- 2009 की धारा 69-ए के तहत चीनी एप बैन करने का फैसला किया।

सरकार ने बताया कि पिछले कुछ वर्षों में भारत प्रमुख डिजिटल बाजार बन गया है। इसके साथ ही भारतीयों के डेटा की सुरक्षा से जुड़ी चिन्ताएं सामने आती रही हैं। सरकार ने पाया कि चीनी एप देश के लिए खतरा हैं।

59 चीनी एप पर प्रतिबंध लगाने के 24 घंटे के भीतर ही चीनी प्रतिक्रिया आ गई। चीन के विदेश मंत्रालय के पक्ता झाओ लियुआन ने भारत में चीनी एप पर रोक के बारे में प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा—चीन द्वारा जारी नोटिस से अत्यधिक चिंतित हैं और कहा कि भारत सरकार पर अंतराष्ट्रीय निवेशकों के वैध और कानूनी अधिकारों की रक्षा की जिम्मेदारी है।

दरअसल भारत और चीन के बीच चल रहे टकराव में अब इन एप के बंद करने से व सरकार द्वारा हाइवे काट्टेक्ट इत्यादि खत्म करने के फैसले से चीन में बेहद घबराहट हो गई है। चीन सरकार के मुख पत्र माने जाने वाले समाचार पत्र ग्लोबल टाइम्स ने लिखा कि टकराव की कारण से दोनों देशों के बीच कारोबार 50 फिसदी तक अर्थात लगभग तीन लाख करोड़ रुपए तक घट सकता है। ग्लोबल टाइम्स में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में चीन के खिलाफ बढ़ रहे आक्रोश के कारण दोनों देशों के बीच व्यापार में बहुत ज्यादा कमी आ सकती है। इस प्रकाशित समाचार के अनुसार जब से लद्दाख में विवाद बढ़ा है भारत में राष्ट्रवाद की भावना काफी तेज हो गई है और भारतीय नेता और प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया लगातार चीन को निशाना बना रहा हैं टीवी पर निरंतर बहस हो रही है। इस कारण इस साल दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार में करीब 30 से 50 प्रतिशत तक की कमी आ सकती है। भारत सरकार द्वारा चीनी एप बैन करने के कदम को देर से आया फैसला ही कहा जाएगा क्योंकि जब विवाद हुआ तब ही सरकार को यह एप बैन करने का विचार आया।

हमारे देश में चीन के खिलाफ इन एप पर रोक लगाने के बारे में पहले भी काफी विरोध एवं प्रदर्शन हुए हैं और अनेकों दलीलें भी दी गई हैं। मगर यह सब कुद जब हुआ जब चीन के खिलाफ देशभर में काफी आक्रोश है और सरकार पर भी इस बात को लेकर काफी दबाव है कि उसे चीन के विरुद्ध कुछ ऐसे कदम उठाने चाहिए जिससे जनता का गुस्सा कुछ हद तक शांत हो सके। हालांकि सरकार स्वयं भी यह मानती है कि चीनी एप पर प्रतिबंध लगाने का उसका निर्णय बहुत निर्णायक या मारक नहीं है, इसके बावजूद उसने अगर प्रतिबंध के रास्ते पर अपने कदम बढ़ाए हैं तो यह आगे चलकर देश के हित में ही होगा। इस बात से कोई इंकार नहीं करेगा कि चीन ने इन एप के जरिये काफी सेंधमारी हमारे यहां कर रखी थी। नियमतः सरकारी सूचना जारी होने के 24 घंटे के अंदर प्ले स्टोर और एप स्टोर से यह सारे एप हट जाने चाहिए। इन सबके अलावा सरकार को इस बात के लिए भी चौकस रहना होगा कि कहीं यह एप चोर दरवाजे से तो घुसने की कोशिश में नहीं हैं?

भाई-भाई कह कर धोखा देने वाला देश है चीन, जानिये क्यों चाहता है गलवान घाटी

योगेश कुमार गोपाल

1962 की जंग में गलवान नदी घाटी का क्षेत्र जंग का प्रमुख केन्द्र रहा था। चीन ने वर्ष 1958 से ही यहां सड़क बनानी शुरू कर दी थी। सड़क बनने के बाद पं. नेहरू ने उस पर आपत्ति भी जताई और तभी से भारत कहता रहा है कि अक्साई चिन को चीन ने हड़प लिया है।



भारत-चीन के बीच चल रही तनातनी कम करने के लिए दोनों देशों के बीच शुरू हुई वार्ता 14-15 जून की रात धूर्त चीन की धोखेबाजी के बाद रूक गई है। दरअसल चीनी सैनिकों द्वारा पूर्वी लद्दाख की गलवान घाटी में भारतीय सैनिकों पर धोखे से अचानक हमला कर दिया गया, जिसमें सेना के एक कर्नल सहित 20 वीर योद्धा वीरगति को प्राप्त हुए। हालांकि भारतीय योद्धाओं ने भी जांबाजी का परिचय देते हुए चीन के कमांडिंग ऑफिसर सहित 43 सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया। 1975 में अरुणाचल के तुलुंग ला में हुए संघर्ष के 45 वर्षों बाद भारत-चीन के बीच यह सबसे बड़ा सैन्य टकराव है, जिसके चलते दोनों देशों के बीच सीमा पर पहले से जारी गतिरोध की स्थिति गंभीर हो गई है। चीन ने पूर्वी लद्दाख के पेंगोंग सो झील, गलवान घाटी, डेमचोक सहित कई इलाकों में सीमा का अतिक्रमण किया है, जिसे लेकर भारत द्वारा कड़ी आपत्ति जताने के साथ चीनी सैनिकों के पीछे हटने की मांग की जा रही थी। दोनों देशों के बीच उत्पन्न गतिरोध को दूर करने के लिए वार्ता शुरू हुई थी लेकिन चालबाजी और धूर्तता चीनी रक्त के कतरे-कतरे में समायी है। 1962 में 'हिन्दी-चीनी भाई-भाई' की आड़ में धोखे से भारत पर आक्रमण कर उसने 38000 किलोमीटर इलाके पर कब्जा कर लिया था और अब एलएसी से दोनों देशों की सेनाओं के पीछे हटने के समझौते के बावजूद इस समझौते को धत्ता बताते हुए उसने भारतीय सैनिकों पर हमला कर धूर्तता का स्पष्ट परिचय दिया है। दुनिया में चीन ही ऐसा देश है, जिसकी सीमा सबसे ज्यादा देशों से सटी है। चीन के भूमि से सटे 14 और समुद्री सीमा के किनारे 6 पड़ोसी देश हैं और इनमें से ऐसा एक भी देश नहीं है, जिसके साथ चीन के जमीन, नदी या समुद्री सीमा को लेकर मतभेद न रहे हों। वह ऐसा देश है, जो हमेशा 'दो कदम आगे, एक कदम पीछे' की नीति पर चलता आया है।

1962 की जंग में गलवान नदी घाटी का क्षेत्र जंग का प्रमुख केन्द्र रहा था। चीन ने वर्ष 1958 से ही यहां सड़क बनानी शुरू कर दी थी। सड़क बनने के बाद पं. नेहरू ने उस पर आपत्ति भी जताई और तभी से भारत कहता रहा है कि अक्साई चिन को चीन ने हड़प लिया है लेकिन चीन पर इसका कोई फर्क नहीं पड़ा। बीते वर्षों में इस इलाके पर भारत की रणनीति बदली है और वह मुखर होकर इस पर अपना अधिकार जताने लगा है। चीन का आरोप है कि भारत गलवान घाटी के पास रक्षा संबंधी गैरकानूनी निर्माण कर रहा है। हालांकि भारत-चीन के बीच हुए समझौतों के तहत दोनों देश वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) को मानेंगे और उसमें कोई नए निर्माण नहीं करेंगे लेकिन चीन ने कभी इन समझौतों का पालन नहीं किया। वह इस क्षेत्र में पहले ही जरूरी सैन्य निर्माण कर चुका है और अब मौजूदा स्थिति बनाए रखने की बात करता है। भारत लद्दाख में सड़क बना रहा है, जिसका चीन विरोध कर रहा है और इसी कारण चीनी सैनिक पिछले कुछ दिनों से भारतीय सैनिकों से भिड़ रहे थे। चीन की फितरत ही धोखेबाजी की रही है, जो किसी समझौते को नहीं मानता।

चीन की बौखलाहट का सबसे बड़ा कारण यही है कि भारत द्वारा जम्मू-कश्मीर, हिमाचल, उत्तराखण्ड, सिक्किम तथा अरुणाचल प्रदेश से होकर गुजरने वाली भारत-चीन की 3488 किलोमीटर लंबी सीमा पर सड़क, रेल तथा हवाई अड्डों का जाल बिछा दिया गया है। आधा दर्जन हवाई पट्टियों, करीब 125 पुलों और सड़क का 80 फीसदी काम पूरा हो चुका है, जो चीन की आंखों की

किरकिरी बन रहा है। वह नहीं चाहता कि भारतीय सेना की इन इलाकों तक सुगम पहुंच बने क्योंकि वह जब-तब इन इलाकों में अतिक्रमण की कोशिश करता रहता है। गलवान घाटी में भी वह अपनी सम्प्रभुता का दावा करता रहा है। पश्चिमी हिमालय की गलवान नदी घाटी विवादित क्षेत्र अक्साई चिन में आती है, जो लद्दाख और अक्साई चिन के बीच भारत-चीन सीमा के नजदीक स्थित है। एलएसी यहां अक्साई चिन को भारत से अलग करती है। गलवान घाटी में मौजूदा विवाद का मुख्य कारण भारत द्वारा किए जा रहे सड़क निर्माण को लेकर है। दरअसल भारत दौलत बेग ओल्डी स्थित अपने एक महत्वपूर्ण सैन्य हवाई अड्डे तक सड़क बना रहा है, जो एलएसी के आसपास अपने इंफ्रास्ट्रक्चर को बेहतर करने की सैन्य रणनीति का अहम हिस्सा है। भारत के लिए यह सड़क इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इसके जरिये एलएसी पर तैनात भारतीय सेना को किसी आपातकालीन स्थिति में शीघ्र मदद प्रदान की जा सकती है।

अगर अक्साई चिन में भारत सैन्य निर्माण करता है तो वहां से चीनी सेना की गतिविधियों पर नजर रखना आसान हो जाएगा, जो चीन को हजम नहीं हो रहा। दरअसल चीन को भय है कि एलएसी पर भारत अपनी सड़क व्यवस्था मजबूत करने में सफल रहा तो उसे अब तक यहां की स्थिति से जो फायदा मिल रहा है, उसे वह खो देगा। हालांकि भारत ने चीन की आपत्तियों को सदैव यह कहकर खारिज किया है कि वह अपने इलाके में सड़क निर्माण कर रहा है, जिसका उसे पूरा अधिकार है। भारत द्वारा किए जा रहे सड़क निर्माण को रोकने के लिए ही चीन विवादित इलाके में अपनी सैन्य गतिविधियां बढ़ाते हुए काफी आगे तक बढ़ आया था। पिछले डेढ़ महीने के दौरान यह तीसरा मौका है, जब चीन ने भारत पर दबाव बनाकर इस सड़क निर्माण को रोकने के लिए हमारे सैनिकों से झड़प की। 5 मई को चीनी सैनिकों ने पेंगोंग झील के पास भारतीय सैनिकों को गश्त करने से रोका था, उस झड़प में दोनों देशों के करीब सौ सैनिक घायल हो गए थे। उसके बाद 9 मई को उत्तर सिक्किम के नाथूला सेक्टर में हुई झड़प में भी दर्जनभर सैनिक घायल हुए थे। अब गलवान घाटी विवाद को लेकर चीन द्वारा धोखेबाजी से हमारे बीस सैनिकों को शहीद किया गया है।

कोरोना वायरस को लेकर अपनी करतूतों पर शर्मिंदा होने या अपराधबोध से ग्रस्त होने की बजाय चीन इन दिनों जिस तरह की हरकतें कर रहा है, उसका मक्कार चेहरा एक बार फिर दुनिया के सामने है। चीन की ही करतूतों से वैश्विक महामारी कोरोना के चलते दुनिया के अनेक देशों में चीन के प्रति नफरत के भाव उबल रहे हैं। बहरहाल, भारतीय जांबाजों की जवाबी कार्रवाई को देखते हुए चीन को समझ आ गया होगा कि भारत के साथ उलझने का अंजाम उसके लिए सुखद नहीं होगा, वह भी ऐसे समय में जब भारत अंतराष्ट्रीय स्तर पर चीन के विरुद्ध माहौल बनाने में सफल हो रहा है। भारत ने चीन को अब यह स्पष्ट संदेश दे दिया है कि सीमा विवाद को सैन्य बल की ताकत पर नए सिरे से लिखने की उसकी चालबाजी कदापि स्वीकार्य नहीं होगी और भारत अब ईट का जवाब पत्थर से देने की ताकत रखता है। फिलहाल हमारे वीर योद्धाओं का बलिदान व्यर्थ न जाए, भारत सरकार को इसके लिए पुख्ता इंतजाम करने चाहिए, साथ ही पहले से ही चरमराई चीनी अर्थव्यवस्था को बड़ा झटका देकर आर्थिक दृष्टि से भी उस पर जमकर प्रहार करना चाहिए।

इस दुनिया में एक ही तथ्य निश्चित है, वह है- परिवर्तन। कल तक जो मनुष्य इस अहंकार में जी रहा था कि वह अपने बौद्धिक कुशलता से किसी भी समस्या का चुटकी बजाते ही हल ढूँढ़ सकता है, उसे कोरोना की महामारी ने धूल फाँकने पर मजबूर कर दिया। समय बड़ा बलवान है। कब, कहाँ, कैसे और क्यों क्या कुछ हो जाए यह कोई नहीं बता सकता। इसलिए समय के साथ स्वयं को बदलना चाहिए।

इस विपदा की घड़ी में सारा संसार जहाँ-तहाँ थम-सा गया है। इससे भारत भी अछूता नहीं है। इस स्थिति में रोटी, कपड़ा और मकान जो हमारी मूलभूत आवश्यकताएँ हैं उनकी आपूर्ति करना सरकार की पहली प्राथमिकता है। किंतु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009 के अनुसार प्रारंभिक शिक्षा 6-14 वर्षों यानी कक्षा एक से आठ तक के बच्चों का मूलभूत अधिकार है। इसे किसी भी स्थिति में नहीं रोकना चाहिए।

यही कारण है कि एक ओर जहाँ केंद्र सरकार को केंद्रीय स्कूलों में प्रारंभिक शिक्षा को सुनिश्चित करने के लिए जी तोड़ मेहनत कर रही है वहीं दूसरी ओर राज्य सरकारें अपने-अपने ढंग से इस दिशा में आगे बढ़ने के लिए कमर कस रही हैं। कल तक जो यह माना जाता था कि औपचारिक शिक्षा मात्र निश्चित स्थानों, पाठ्यक्रमों, संसाधनों द्वारा संभव है, उसे कोरोना की संकट घड़ी ने गलत साबित किया है। बच्चों के शिक्षा रूपी मौलिक अधिकार को पूरा करने के लिए पाठशाला की धारणा बदलकर घर को शिक्षाभ्यास का केंद्र बना दिया गया। पाठ्यक्रम के भार को पूरी तरह से बगल में रखते हुए मात्र सीखने की संप्राप्तियों पर ध्यान केंद्रित करना, संसाधनों के नाम पर श्यामपट, चॉकपीस, पोंछक जैसी रूढ़ी संसाधन सामग्री के स्थान पर ई-सामग्री व ई-समूहों को स्थान देना आज की बदलती शिक्षा का परिचायक बन गया है।

प्रशिक्षण के दौरान प्रायः हम जिन बातों को पढ़कर व्यवहार के धरातल पर आते-आते नगण्य कर देते थे आज वही फिर से सच साबित हो रहे हैं। बच्चे की पहली पाठशाला उसका घर है, पहली गुरु उसकी माँ हैं, तो देखिए वही अवधारणा कोरोना के चलते साकार हो रही है। सत्य तो यही है कि गुरु बच्चे और ज्ञान के बीच पहले भी सेतु था, आज भी सेतु है और कल भी सेतु ही रहेगा। वह अपने फेसिलिटेटर रूप से कभी बाहर आ ही नहीं सकता।

कोरोना के चलते शिक्षा ने अपना मंच बदला है। पहले जहाँ वह श्यामपट, कापी-पुस्तकों तक सीमित थी आज वह मोबाइल, टैब, लैपटाप, कंप्यूटर के जरिए जहाँ-तहाँ पहुँच गयी है। यही कारण है कि देश की अब तक की जितनी भी शिक्षा नीतियाँ हैं, वे तकनीकी व सांकेतिक रूप से शिक्षा को सुदृढ़ बनाने पर जोर देती रहीं। आज उनके सुझाव कसौटी की माँग पर खरे उतर रहे हैं। कुछ शब्द जो कोरोना से पूर्व हमारे लिए मायने नहीं रखते थे आज वही सर्वस्व बन चुके हैं। जूम, माइक्रोसॉफ्ट, गूगल आदि के ऑनलाइन प्लेटफार्म सीखने का वर्चुअल केंद्र बनकर उभरे हैं। निश्चित तौर पर निकट भविष्य में इन्हीं का वर्चस्व रहेगा। चलिए अब हम वर्तमान में देश के विभिन्न प्रांतों में प्रारंभिक शिक्षा के लिए उठाए गए क़दमों की समीक्षा करते हैं-

उत्तर भारत

उत्तर भारत के उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, चंडीगढ़, राजस्थान, हरियाणा, उत्तराखंड, दिल्ली आदि सभी प्रांतों में ई-पाठशाला, दीक्षा एप और स्वयं से पठन

कोरोना काल में राज्यों में शिक्षा प्रदान करने के बदले स्वरूप पर एक नजर

पहले जहाँ शिक्षा श्यामपट, कापी-पुस्तकों तक सीमित थी आज वह मोबाइल, टैब, लैपटाप, कंप्यूटर के जरिए जहाँ-तहाँ पहुँच गयी है। यही कारण है कि देश की अब तक की जितनी भी शिक्षा नीतियाँ हैं, वे तकनीकी व सांकेतिक रूप से शिक्षा को सुदृढ़ बनाने पर जोर देती रहीं।

पाठन की सामग्री, स्कूल के व्हाट्सएप समूह से बच्चों / अभिभावक को जोड़कर पढ़ाया जा रहा है। अलग-अलग विषय के लिए पाठ को समझाने के लिए वॉर्स मैसेज का भी प्रयोग किया जा रहा है। बच्चों द्वारा नोट बुक में कार्य करने के बाद फोटो संबंधी व्हाट्सएप ग्रुप में डाले जा रहे हैं और अध्यापक उसकी जाँच कर रहे हैं। त्रुटियाँ सुधार कर पुनः फोटो को अपडेट कर रहे हैं। साथ ही ध्यानाकर्षण, आधारशिला और शिक्षण संग्रह पर अध्यापकों के लिए क्विज का आयोजन किया जा रहा है। इससे अध्यापक अपडेट रहते हैं।

दीक्षा एष पर टीचर ट्रेनिंग चल रही है। साथ में मिशन प्रेरणा व मिशन कायाकल्प के कार्यक्रम भी संचालित हैं, जिसके लिए जनपद स्तर /ब्लॉक स्तर पर पर अलग-अलग कई व्हाट्सएप समूह बनाए गए हैं। हर व्हाट्सएप समूह अलग-अलग उद्देश्यों की पूर्ति के लिए बनाया गया है। विशेष बात यह है कि उत्तर प्रदेश में व्हाट्सएप ग्रुपों की सहायता से छात्रों व अध्यापकों को जोड़ने का जो प्रयास किया जा रहा है, वह काफी रंग ला रहा है। जबकि झारखंड में दूरदर्शन की सहायता से शैक्षिक कार्यक्रमों का प्रसारण किया जा रहा है। इससे इंटरनेट की बचत वैकल्पिक उपाय ढूँढ़े जा रहे हैं। पंजाब में गूगल ड्राइव के लिंकों की सहायता से शिक्षार्थियों को सीधे-सीधे लाभ पहुँचाया जा रहा है।

राजस्थान में शिक्षावाणी नाम से नवीन प्रयास किए जा रहे हैं। दिल्ली तथा उत्तराखंड में वीडियो पाठ, जूम कक्षाएँ, उत्तर सहित वर्कशीट्स, क्रियाकलाप, श्रव्य सामग्री, कठपुतलियों द्वारा खेल-खेल में शिक्षा, बच्चों

के साझा अनुभवों के माध्यम से ई-शिक्षण दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति कर रहा है।

दक्षिण भारत

दक्षिण भारत जहाँ शिक्षा का प्रतिशत भारत में सबसे अधिक है, वहाँ के केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, पांडिचेरी, अंडमान व निकोबार आदि सभी प्रांतों में विशेष शैक्षिक वेबसाइटों से जोड़कर बच्चों तक शिक्षा पहुँचाने का प्रयास किया जा रहा है। वर्कशीट्स, रिविजन शीट्स, आडियो-वीडियो पठन सामग्री के अतिरिक्त यूट्यूब पर विशेष कक्षाओं का प्रसारण किया जा रहा है। इससे बच्चे अपनी सुविधानुसार पठन देख व सुन सकते हैं। चूंकि दक्षिण में शैक्षिक जागरूकता अधिक है, इसलिए यहाँ पर परिणाम त्वरित गति में निकलकर आ रहे हैं। आंध्र प्रदेश में जहां अम्मा ओडि, तेलंगाना में बंगारु बडुलु, कर्नाटक में नम्मा बडी शीर्षकीय शैक्षिक कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं वहीं केरल, तमिलनाडु, पांडिचेरी व अंडमान में दूरदर्शन, क्यूआर कोड युक्त ई-पुस्तकों, दीक्षा एप्प तथा प्रांत विशेष के एप्पों द्वारा बच्चों को सरल व सुगम ढंग से शिक्षा पहुँचाने का प्रयास किया जा रहा है।

पूर्वी भारत

पूर्वी भारत के पश्चिम बंगाल, ओडिशा, त्रिपुरा, असोम, मणिपुर, मिजोरम, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, सिक्किम आदि सभी प्रांतों में विशेष शैक्षिक पहल से जोड़कर बच्चों तक शिक्षा पहुँचाने का प्रयास किया जा रहा है। दूरदर्शन, यूट्यूब आदि पर कक्षावार आडियो-वीडियो सामग्री, खेल, पहेलियों आदि की सहायता

से शिक्षण किया जा रहा है। इन राज्यों में अन्य राज्यों की भांति नवोन्मेषणात्मक शैक्षिक कार्यक्रमों के न केवल प्रति दिलचस्पी दिखायी है बल्कि उसे अमलीजामा भी पहनाया है। त्रिपुरा जैसे राज्यों में नोतुन दिशा नामक कार्यक्रम से बच्चों की शिक्षा के प्रति जो गंभीरता दर्शाने का प्रयास किया गया है वह वाकई प्रशंसनीय है।

पश्चिमी भारत

पश्चिमी भारत के महाराष्ट्र, गुजरात, गोवा, दियु दामन आदि सभी प्रांतों में दूरदर्शन, यूट्यूब आदि पर कक्षावार आडियो-वीडियो सामग्री, खेल, पहेलियों आदि की सहायता से शिक्षण किया जा रहा है। इन राज्यों में ऑनलाइन अभ्यास व उपक्रम की व्यवस्था की ओर विशेष ध्यान दिया गया है। प्रांत विशेष द्वारा विकसित एप्प के माध्यम से ई-शिक्षा तक पहुँचाने का प्रबंध किया गया है। इनके अतिरिक्त कक्षावार, विषयवार, पाठवार शैक्षिक लिंकों की सहायता से अपनी सुविधानुसार अधिगम करने के प्रबंध किए गए हैं। आमची बियाणे बैंक, आजच्या पुस्तकाचे नाव: शूर मित्र, पोस्टर कलरमध्ये वस्तुचित्रातील बकेट रंगवणे, ऋतू कसे निर्माण होतात?, घन ठोकळ्यांची मांडणी आदि शीर्षकीय पाठों से प्रतिदिन अभ्यास कार्य तैयार किए जा रहे हैं। इनके अतिरिक्त बच्चों को सुनाने के लिये 'एक पाऊल वाचन समृद्धीकडे' अंतर्गत प्रतिदिन एक कहाणी भेजी जाती है। इसके लिये व्हाट्सएप, यूट्यूब चैनल व फेसबुक का उपयोग करते हैं। विशेष बात यह है कि जिन अभिभावकों के पास एंड्रॉयड मोबाइल फोन नहीं है उनके लिये कैवल्य फाउंडेशन के टोल फ्री नंबर 1800-

572-8585 पर सुबह नौ से शाम पांच बजे तक बिना किसी शुल्क के कहानी सुन सकते हैं।

मध्य भारत

मध्य भारत के मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ आदि प्रांतों में जूम एण्ड के माध्यम से प्रतिदिन तीन घंटों की कक्षाओं का संचालन किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त दूरदर्शन व आकाशवाणी का विशेष रूप से उपयोग किया जा रहा है। कोरोना के इस विपदाकाल में दूरदर्शन व आकाशवाणी रामबाण साबित हो रहे हैं। वीडियो पाठ, जूम कक्षाएँ, उत्तर सहित वर्कशीट्स, क्रियाकलाप, श्रव्य सामग्री की सहायता से प्रारंभिक शिक्षा पर पूरा ध्यान दिया जा रहा है। छत्तीसगढ़ सरकार ने बंद के दौरान स्कूली बच्चों को घर पर ही रहकर पढ़ने के लिए पढ़ई तुंहर दुआर पोर्टल का शुभारंभ किया है।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि भारत भर में सभी राज्य ई-शिक्षा के माध्यम से बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा के प्रति अत्यंत गंभीर हैं। वे अपनी हरसंभव कोशिशों से बच्चों तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ले जाने का भगीरथ प्रयास कर रहे हैं। दूरदर्शन, आकाशवाणी, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, जूम, माइक्रोसॉफ्ट, गूगल वीडियो एप्स हों या फिर अन्य सामग्री की सहायता से बच्चों को शिक्षा से जोड़े रखने की पहल प्रशंसनीय है। हाँ यह अलग बात है कि इन सब प्रयासों के बावजूद भारत में इंटरनेट की स्पीड एक बड़ी समस्या है।

ब्रॉडबैंड स्पीड विश्लेषण करने वाली कंपनी ऊकला की एक रिपोर्ट के मुताबिक, सितंबर 2019 में भारत मोबाइल इंटरनेट स्पीड के मामले में 128वें स्थान पर रहा। भारत में डाउनलोड स्पीड 11.18 एमबीपीएस और अपलोड स्पीड 4.38 एमबीपीएस रही। ऐसे में वीडियो क्लासेज लेते समय इंटरनेट स्पीड का कम ज्यादा होना समस्या पैदा करता है। ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट स्पीड की हालत और बुरी है, बिजली चले जाने पर इंटरनेट या तो बंद हो जाता है या फिर 2जी की स्पीड पर कुछ देख सुन नहीं सकते। इसके अलावा देश के बहुतायत विद्यार्थियों के पास ऑनलाइन पढ़ने और पढ़ाने के संसाधन ही उपलब्ध नहीं है। ऐसी स्थितियों में कैसे ऑनलाइन शिक्षा दी जा ली जा सकती है।

इनके अतिरिक्त तकनीकी साक्षरता हम काफी पिछड़े हैं। अगर तकनीकी शिक्षा से जुड़े अध्यापकों और विद्यार्थियों को छोड़ दें तो बाकी लगभग सभी विषयों से जुड़े शिक्षकों और शिक्षार्थियों को तकनीकी समस्या का सामना करना पड़ता है। प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर यह समस्या बहुत बड़ी समस्या है। आजकल छोटे-छोटे बच्चों से लेकर बड़ों तक को टेबलेट, लेपटॉप, डेस्कटॉप और स्मार्ट फोन के सहारे पढ़ाया जा रहा है। ऐसे में अगर तकनीकी समझ किसी भी स्तर पर हावी होता है तो सीखने की क्षमता पर बड़ा प्रभाव डालता है। सरकार शिक्षकों की तकनीकी समझ बढ़ाने के लिए लगी तो रहती है लेकिन जमीनी स्तर में अगर स्थितियों को देखें तो मामला उल्टा ही नजर आता है। अधिक ऑनलाइन शिक्षा का शारीरिक और मानसिक रूप से भी बुरा प्रभाव पड़ता है।

अतः किसी भी प्रयास का सीमा के भीतर रहकर, बोधगम्यता के स्तर पर जाकर प्रयास किया जाए तो वह लाभकारी सिद्ध होगा। अतः वर्तमान किए जा रहे प्रयासों में से उसके नफ़ा-नुक़लानों पर विजय प्राप्त कर ली जाए तो निश्चित तौर पर प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर किए जा रहे प्रयास निकट भविष्य में उज्ज्वलमय परिणाम लाएँगे।



रवि कुमार

वर्तमान समय में भारत देश में चीन को आर्थिक क्षति पहुंचाने की मांग हो रही है। हालांकि पिछले काफी दिनों से सोशल मीडिया पर चीनी सामान के बहिष्कार करने की मांग हो रही थी इस मांग ने जोर तब पकड़ा जब देश के प्रधानमंत्री ने कहा कि देश के वीर सैनिकों की शहादत व्यर्थ नहीं जाएगी। प्रधानमंत्री की बात को आगे बढ़ाते हुए सरकारी मशीनरी आर्थिक मोर्चे पर चीन को घेरने में जुट गई है। देश के दो बड़े मंत्रालय रेल और संचार ने दो बड़े कदम उठा दिए हैं। इसके बाद शहरी विकास मंत्रालय का नम्बर है, जो दिल्ली से मेरठ के बीच बन रहे एमआरपीसी परियोजना का ठेका चीनी कंपनियों को दिए जाने को चीनी उपकरण हटाने के निर्देश दिए हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि आज पूरे देश में चीनी सामान के बहिष्कार की मांग उठ रही है पर व्यावहारिक रूप से भारत किस हद तक चीनी प्रॉडक्ट्स को पूरी तरह दरवाजा दिखाने की क्या स्थिति में है? चीन से गहन आर्थिक रिश्तों के को ध्यान में रखते हुए चीनी उत्पादों का पूरी तरह बहिष्कार करना उतना आसान नहीं है।

चीन के साथ कारोबारी रिश्ते पूर्णतः समाप्त करने में बहुत ज्यादा मुश्किलें हैं। देश की सबसे ज्यादा निर्भरता इलेक्ट्रॉनिक मशीनरी पर है। वर्ष 2019 में देश में कुछ इलेक्ट्रिकल उत्पादों का 34 फिसदी भाग चीन से आया। भारत चीन से राडारों के लिए ट्रांसमिशन उपकरण, टीवी, कैमरा, हैंड फोन, लाउडस्पीकर समेत अनेकों चीजें खरीदता है। चीन की मोबाइल निर्माता कंपनी श्यामो भी भारत में एक नम्बर पर है। इसकी भारत में बहुत ज्यादा मांग है कि इसने एक-चौथाई से अधिक बाजार पर कब्जा किया हुआ है। भारत ने पिछले साल अपनी फर्टिलाइजर इम्पोर्ट का दो फिसदी भाग पड़ोसी देश चीन से आयात किया था। भारत फर्टिलाइजर में इस्तेमाल होने वाला एक महत्वपूर्ण तत्व डायमोनियम फॉस्फेट चीन से लेता है।

देश में यूरिया को भी चीन से क्रय करना पड़ता है। विगत वर्ष भारत ने 13.87 अरब डॉलर (10 खरब, 58 अरब रुपए से ज्यादा) के मूल्य के न्यूक्लियर रिएक्टर और बायलर्स चीन से मंगाए। जहां तक मेडिकल इक्विपमेंट की बात है पिछले साल मेडिकल इक्विपमेंट के कुल आयात का दो फिसदी चीन से आया। भारत पड़ोसी देश पर पीपीई, वेंटिलेटर्स, एन-95 मास्क तथा दूसरे मेडिकल किट के लिए ज्यादा निर्भर है। लेकिन अब भारत में पीपीई किट और मास्क का उत्पादन देश में शुरू हो चुका है। ऑटो पार्ट्स के कुछ इम्पोर्ट का दो फिसदी भाग पिछले साल चीन से आया। भारत में निर्माण की जाने वाली कारों के कई हिस्से चीन से ही आयात होते हैं। ड्राइव ट्रांसमिशन, स्टीयरिंग, इलेक्ट्रिकल्स, इंटीरियर्स, ब्रेक सिस्टम और इंजन के पार्ट्स चीनी से ही मंगाई जाती है। भारत से चीन को निर्यात होने वाला आधा सामान कच्चा माल होता है। वहीं चीन से आयातित अधिकांश सामान विनिर्मित होता है।

अनेक उत्पाद तो ऐसे हैं, जिनका रॉ मटेरियल चीन भारत से मंगवाकर उनसे बने उत्पाद भारत को ही देता है। मसलन पिछले साल लोहा व स्टील जो करीब 3000 करोड़ रुपए का था उसे भारत ने चीन से मंगवाया और बदले में स्टील से बने हजार करोड़ रुपए के उत्पाद निर्यात किए। चीन द्वारा निर्यात की जाने वाली अधिकांश वस्तुओं में से नौ भारत के कच्चे माल से निर्मित होती हैं। भारत दवा निर्यात में शीर्ष देशों में से एक जरूर है लेकिन कच्चे माल के लिए चीन पर भारत निर्भर है। भारत में दवा निर्माता कंपनियां 70 प्रतिशत एपीआई यानि एक्टिव फार्मास्युटिकल इंग्रोडिएंट्स चीन से मंगती है। 2018-19 में 240 करोड़ रुपए के एपीआई चीन से भारत में आयात हुए। 75 फिसदी एंटीबायोटिक्स बाजार में चीन एकमेव कब्जा है। चीन हमसे कच्चा माल मंगाकर उसे भारत को महंगे उत्पाद बेचता है। जब कभी भी चीन के साथ भारत का मतभेद बढ़ता है तो चीनी वस्तुओं के बहिष्कार का माहौल बनने लगता है। लेकिन हकीकत में सस्ते लेबर और व्यापक स्तर पर विनिर्माण के बूते चीन ने सुनियोजित ढंग से दुनियाभर के बाजारों में कम कीमतों के उत्पादों से अपना प्रभाव जमाया है। इलिये जिन देशों में चीन ने पांव पसारें, वहां स्थानीय कंपनियों को मुकाबले से बाहर का दरवाजा दिया दिया। बाजार एनालिटीक का मानना है कि इसमें कोई संशय नहीं है कि हम चीन से निर्भरता खत्म कर आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ सकते हैं लेकिन यह सब इतना आसान नहीं है इसमें लंबा वक़्त लगेगा। सरकार को दृढ़ शक्ति का सामना करना होगा और तमाम दवाबों के बावजूद आत्मनिर्भर नीति पर चलने के लिए नीतियों में परिवर्तन करना होगा और भारतीय उपभोक्ताओं को भी सस्ते का मोह छोड़ना होगा।

चीनी सामान का आयात रुकना ही चाहिए जिन सामान का उत्पादन भारत में संभव है

वर्ष 1991 में भारत एवं चीन में प्रति व्यक्ति आय लगभग बराबर थी। तकनीक व अन्य कुछ मामलों में भारत चीन से आगे था। कुल मिलाकर चीन, भारत से कोई बहुत आगे नहीं था। लेकिन वर्तमान परिदृश्य बदल गया है अब चीन भारत से बहुत आगे हो गया है।

कोरोना वायरस से उपजी महामारी ने समस्त संसार में विश्व की अर्थव्यवस्थाओं को ध्वस्त कर दिया है तब ऐसी स्थिति में, देश के प्रधानमंत्री इसी महत्वपूर्ण समय को भारत के लिए एक अच्छे मौके की तरह देख रहे हैं। इसी कड़ी में प्रधानमंत्री ने देश के नाम संबोधन में पहली दफा 'लोकल पर वोकल' होने का नारा देने के साथ साथ उन्होंने केंद्र सरकार की ओर से देश अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के लिये 20 लाख करोड़ रुपये के आर्थिक पैकेज की घोषणा की और कहा कि यह पैकेज भारत को आत्मनिर्भर बनाने में एक बहुत ही महत्वपूर्ण कदम साबित होगा। इसी अवसर पर प्रधानमंत्री ने देशवासियों से कहा है कि 'मेक इन इंडिया' को दृढ़ बनाना अब आवश्यक व महत्वपूर्ण हो गया है और यह सब करने के लिये हमें आत्मनिर्भरता व आत्मबल से परिपूर्ण होना होगा। विगत वर्षों में जब भारत ने स्थानीय उत्पाद को बढ़ावा देने के मामले में यह निर्णय लिया था कि खादी और हथकरघा का उपयोग अपने दैनिक जीवन में बढ़ाएंगे तब इन उत्पादों के क्रय का रिकार्ड स्तर बड़ गया था। यदि हम देश के प्रत्येक नागरिक ठान लेंगे की भारत को आर्थिक रूप से आत्म निर्भर बनाना है तो यह सब कर सकने की क्षमता हमारे देश के नागरिकों में है।

इस बात का अहसास हमें जब हुआ जब कोरोना महामारी फैली तब यह पता चला कि हम चीन पर

कई गुना ज्यादा निर्भर होते जा रहे हैं। जिस सामान जैसे दवाईयों के लिए कच्चा माल, इलेक्ट्रॉनिक्स मदों के कई उत्पाद एवं ऐसा सामान जिसका उत्पादन भारत में बेहद आसानी से हो सकता है उसे भी हम चीन से आयात करने लगे हैं

भारत एवं चीन में प्रति व्यक्ति आय वर्ष 1991 में जब भारत में आर्थिक सुधार कार्यक्रम लागू किया गया था उस समय लगभग बराबर थी। तकनीक के कुछ मामलों में कुछ अन्य मामलों में चीन आगे था और कुल मिलाकर चीन, भारत से कोई बहुत आगे नहीं था। विगत 30 वर्षों बाद भारत और चीन के बीच व्यापार बढ़ा है लेकिन यह चीन के पक्ष में व्यापार अधिक हो गया है। भारत सामान्यतः चीन को कच्चे माल का निर्यात करता है परंतु चीन भारत को मुख्यतः निर्मित सामान का निर्यात करता है। इसी कारण रोजगार के अवसर चीन में उत्पन्न होते हैं। वर्ष 2001-02 में भारत और चीन के बीच लगभग 200 करोड़ अमेरिकी डॉलर का व्यापार हुआ था लेकिन यह व्यापार आज बढ़कर 8000 करोड़ अमेरिकी डॉलर से भी अधिक का हो गया है। आज भारतीय बाजार चीनी आईटम से भरे पड़े हैं। कई भारतीय कंपनियां चीन में ही वस्तुओं का निर्माण करवाकर उस पर अपने ब्राण्ड की सील लगाती हैं और इसे अपना ब्राण्ड बताकर भारतीय बाजारों में बेचती हैं। यह कहना गलत नहीं होगा कि चीन से

भारत का व्यापारिक रिश्ता बढ़ा है वैसे- वैसे भारत में औद्योगिकीकरण समाप्त होता चला गया है। इसके साथ ही, भारत के लिए व्यापार का नुकसान बढ़ता गया है। यदि भारत में उद्योगों के विकास पर आरंभ से ही जोर दिया होता तो अभी हम उपभोक्ता वस्तुओं तक का आयात चीन से नहीं कर रहे होते। यह देश के लिए एक चिंता जनक स्थिति बन गई है। इस सबका परिणाम सूक्ष्म, लघु एवं मझौले उद्योगों को भोगना पड़ा है।

वर्तमान में यदि देश को आत्मनिर्भर होना है तो हमें अपनी विचारधारा में ही परिवर्तन करना होगा। वर्तमान में यदि हम वैश्विक बाज़ारीकरण की परम्बराओं पर विश्वास करते हैं तो इस पर देश को सोचने की ज़रूरत है। चीन हो गया अन्य देश से हमें कम से कम प्रारंभिक दौर में उन वस्तुओं के आयात को विश्वासपूर्वक रोकना होगा जिनका निर्माण भारत में आसानी से किया जा सकता है। यदि ऐसा प्रयास नहीं करेंगे तो हम अपने कार्य में सफल नहीं हो सकेंगे। इस बात पर आज गहन चिंतन की आवश्यकता है कि चीन से हम किस हद तक के व्यापारिक रिश्ते बनाए। क्योंकि

में बेचे जाते हैं।

भारत का फार्मा उद्योग कच्चे माल के लिए चीन पर ही निर्भर है क्योंकि कारण यह है कि चीन में सस्ता मिलता है और दूसरे भारत में इसका निर्माण अल्प मात्रा में हो रहा है। इलेक्ट्रॉनिक्स के क्षेत्र में 56 तरीके के उत्पाद हम चीन से आयात करते हैं। इसी प्रकार फार्मा क्षेत्र में देश में कुल कच्चे माल की खपत का 80 फिसदी हिस्सा चीन से आयात होता है। यदि देश की अर्थव्यवस्था को आत्म निर्भर बनाना है तो इन बातों पर विचार करने की आवश्यकता है। हमारी पूर्व की आर्थिक नीतियों में हमने देश के निजी क्षेत्र को बढ़ावा नहीं दिया है और हम सोचते रहे कि बाज़ार की शक्तियाँ ही इस बात का ध्यान रखेंगी।

विदेशी मुद्रा की वास्तविक अदला बदली की दरें भी विदेशी व्यापार के क्षेत्र में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यदि किसी देश में विदेशी मुद्रा की वास्तविक अदला बदली की दर 5 फिसदी से बढ़ती है तो माना जाएगा कि उस देश के आयात करों में 5 फिसदी की कमी हो गई है। मान लिया जाए कि भारत में यदि वर्ष 2008 से



यदि व्यापारित रिश्तों को तुरंत समाप्त किया तो संभावना यह है कि जिन वस्तुओं के लिए भारत चीन पर आश्रित है उन वस्तुओं के चीन दाम बढ़ा दे अथवा इन वस्तुओं को वह भारत को निर्यात करने से ही इंकार कर दे। उपरोक्त दोनों ही स्थितियों में भारत को क्षति होगी। देश के नागरिकों को भी स्वयं की सोच में परिवर्तन लाना होगा एवं चीन के सामान को केवल इसलिए खरीदना क्योंकि वह सस्ता है। भारत में बना हुआ सामान, चाहे वह चीन के मुकाबले महंगा ही क्यों न हों परंतु हमें उसका उपयोग उपभोग करना होगा ताकि भारत की अर्थव्यवस्था को तेज़ी से आगे बढ़ाया जा सके एवं रोज़गार के अधिक से अधिक अवसर देश में ही उत्पन्न होने लगे।

चीन अपनी कम्पनियों को, देश से निर्यात बढ़ाने के उद्देश्य से, 8 से 12 फिसदी तक निर्यात प्रोत्साहन की राशि उपलब्ध कराता है। साथ ही, चीन में उत्पादों का बड़े पैमाने पर निर्माण करने के चलते उत्पादन लागत बहुत कम आती है और ये उत्पाद अंतराष्ट्रीय बाज़ार में अपेक्षाकृत रूप से कम मार्जिन

वर्ष 2014 के बीच विदेशी मुद्रा की अदला बदली की दर 40 फिसदी से बढ़ी है तो इसका आशय यह हुआ कि भारत में आयात करों में 40 फिसदी की कमी हो गई है एवं इसका सीधा सा अर्थ है भारत में आयात कर कई क्षेत्रों में ऋणात्मक हो गया है। स्पष्टतः विदेशी मुद्रा की वास्तविक अदला बदली की दरों को भी स्थिर रखना बहुत आवश्यक हो गया है।

यदि देश चाहता है कि देश में वस्तुओं का उत्पादन ज्यादा हो, नागरिकों के लिए रोज़गार के ज्यादा से ज्यादा अवसर निर्मित हों तो देश को उत्पादन लागतों में कमी कर बिजली के दरें, ज़मीन की कीमतें, लॉजिस्टिक से सम्बंधित कीमतें, वित्त पर ब्याज की दरें एवं इसी प्रकार की अन्य उत्पादन लागतों को भी कम करना होगा ताकि भारत में उत्पादित वस्तुएँ भी अंतराष्ट्रीय बाज़ार में प्रतिस्पर्धी बन सकें। इसके लिये भारतीय नागरिकों को भी देश में ही निर्मित उत्पादों को खरीदने के लिए अपना मन मजबूत करना होगा चाहे वह तुलनात्मक रूप से थोड़ा महंगा ही क्यों न हो।

बहिष्कार कैसे करेंगे जब चीनी मोबाइल लॉन्च होते ही खरीद लाते हैं

आजकल देश में सोशल मीडिया के विभिन्न मंचों पर चीन को बॉयकॉट करने की मुहिम चल रही है। इससे पहले कोविड 19 के परिणामस्वरूप जब देश की अर्थव्यवस्था पर वैश्वीकरण के दुष्प्रभाव सामने आने लगे थे तो प्रधानमंत्री ने आत्मनिर्भर भारत का मंत्र दिया था।

उस समय यह मंत्र देश की अर्थव्यवस्था को दीर्घकालिक लाभ पहुंचाने की दृष्टि से उठाया गया एक मजबूत कदम था जो आज भारत चीन सीमा विवाद के चलते बॉयकॉट चायना का रूप ले चुका है। लेकिन जब तक हम आत्मनिर्भर नहीं बनेंगे चीन के आर्थिक बहिष्कार की बातें खोखली ही सिद्ध होंगी। इसे मानव चरित्र का पाखंड कहें या उसकी मजबूरी कि एक तरफ इंटरनेट के विभिन्न माध्यम चीनी समान के बहिष्कार के संदेशों से पटे पड़े हैं तो दूसरी तरफ ई-कॉमर्स साइट्स से भारत में चीनी मोबाइल की रिकॉर्ड बिक्री

की बात करते हैं तो मंज़िल काफी दूर और लक्ष्य बेहद कठिन प्रतीत होता है। इसलिए अगर हम आत्मनिर्भर भारत को केवल एक नारा बना कर छोड़ने की बजाए उसे यथार्थ में आत्मनिर्भर बनाना चाहते हैं तो हमें जोश से नहीं होश से काम लेना होगा। इसके लिए सबसे पहले हमें सच को स्वीकार करना होगा और सत्य यह है कि आज की तारीख में साइंस और टेक्नोलॉजी ही चीन का सबसे बड़ा हथियार है जिसमें हम चीन को टक्कर देने की स्थिति में नहीं हैं। यानी हम बिना हथियार युद्ध के मैदान में कूद रहे हैं तो फिर जीतेंगे कैसे?

दरअसल युद्ध कोई भी हो उसे जीतने के लिए अपनी कमजोरियाँ और ताकत दोनों पता होनी चाहिए। अपनी कमजोरियों को दूर करने का प्रयास करना चाहिए और अपनी क्षमताओं का दोहन। यह सच है कि आज की तारीख में विज्ञान और प्रौद्योगिकी हमारी कमजोरी है



हो रही है। जी हाँ 16 जून को हमारे सैनिकों की शहादत से सोशल मीडिया पर चीन का बहिष्कार करने वाले संदेशों की बाढ़ ही आ गई थी। चीन के खिलाफ देशभर में गुस्सा था तो उसके एक दिन बाद ही 18 जून को ई-कॉमर्स साइट्स पर चीन अपने मोबाइल की सेल लगाता है और कुछ घंटों में ही वे बिक भी जाते हैं।

अगर भारत के मोबाइल मार्केट में चीनी हिस्सेदारी की बात करें तो आज की तारीख में यह 72 से 75% के बीच है और यह अलग-अलग कंपनी के हिसाब से साल भर में 6% से 33% की ग्रोथ रेट दर्ज करता है। लेकिन सिर्फ आम आदमी ही चीनी समान के मायाजाल में फंसा हो ऐसा नहीं है देश की बड़ी-बड़ी कंपनियाँ भी चीन के भ्रम जाल में उलझी हुई हैं। क्योंकि यहाँ सिर्फ मोबाइल मार्केट की हिस्सेदारी की बात नहीं है, टीवी, अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरण से लेकर गाड़ियों के मोटर पार्ट्स, चिप्स, प्लास्टिक, फार्मा या दवा कंपनियों द्वारा आयातित कच्चे माल की मार्किट भी चीन पर निर्भर है।

यही कारण है कि चीन से सीमा पर विवाद बढ़ने के बाद जब भारत सरकार ने चीनी समान पर टैरिफ बढ़ाने की बात कही तो मारुति और बजाज जैसी कंपनियों को कहना पड़ा कि सरकार के इस फैसले का भार ग्राहक की जेब पर सीधा असर डालेगा।

इन परिस्थितियों में जब हम आत्मनिर्भर भारत

लेकिन भारत जैसे देश में क्षमताओं और संभावनाओं की कमी नहीं है और यही हमारी सबसे बड़ी ताकत है। हमारी सबसे बड़ी ताकत है हमारी कृषि और हमारे किसान दोनों को ही मजबूत बनाने की ज़रूरत है। सरकार ने इस दिशा में घोषणाएं भी की हैं लेकिन भारत की अफसरशाही का इतिहास देखते हुए उन्हें क्रियान्वित करके धरातल पर उतारना सरकार की मुख्य चुनौती होगी। हमारी दूसरी ताकत है हमारी सदियों पुरानी चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद।

यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि जिस देश में इस पूर्णतः वैज्ञानिक चिकित्सा पद्धति का उद्भव हुआ उसी देश में उसे यथोचित सम्मानजनक स्थान नहीं मिल पाया। लेकिन वर्तमान कोरोना काल में इसने समूचे विश्व को अपनी ओर आकर्षित किया है। इस मौके का सदुपयोग कर आयुर्वेद की दवाइयों पर सरकार अनुसंधान को बढ़ावा देकर आयुर्वेदिक दवाओं को एक नए और आधुनिक स्वरूप में विश्व के सामने प्रस्तुत करने के लिए वैज्ञानिकों को प्रोत्साहित करे। इसी प्रकार आज जब पूरा विश्व प्लास्टिक के विकल्प ढूँढ़ रहा है तो हम पत्तों के दोने पत्तल बनाने के लघु उद्योगों को बढ़ावा देकर उनकी निर्यात योग्य क्वालिटी बनाकर ग्रामीण रोजगार और देश की अर्थव्यवस्था दोनों को मजबूती दे सकते हैं।

हमारी भौगोलिक और सांस्कृतिक विरासत भी हमारी ताकत है। दरअसल हर राज्य की सांस्कृतिक और भौगोलिक तौर पर अपनी

विशेषता है। कूदरत ने जितनी नेमत इस धरती पर बख्शी है उतनी शायद और किसी देश पर नहीं। अभी हमारे देश में विदेशी अधिकतर भारतीय आध्यात्म से प्रेरित होकर शांति की खोज में आते हैं लेकिन अगर हम अपने देश के विभिन्न राज्यों को एक टूरिस्ट स्पॉट की तरह दुनिया के सामने प्रस्तुत करने के लिए आवश्यक कदम उठाएं तो हमारी धरती ही हमारी सबसे बड़ी ताकत बन जाएगी। यह सभी उपाय अपने साथ देश में विदेशी मुद्रा भंडार और रोजगार दोनों के अवसर साथ लेकर आएंगे।

अब बात करते हैं कमजोरियों की। तो हमारा सबसे कमजोर पक्ष है साइंस और टेक्नोलॉजी। आज के इस वैज्ञानिक युग में इस पक्ष को नज़रअंदाज करके विश्वगुरु बनने की बात करना बेमानी है। विश्व के किसी भी ताकतवर देश को देखें उसने विज्ञान और टेक्नोलॉजी के दम पर ही उस ताकत को हासिल किया है

चाहे वो जापान, चीन, रूस, अमेरिका कोई भी देश हो। हम दावे जो भी करें हकीकत यह है कि भारत इस क्षेत्र में इन देशों के मुकाबले बहुत पीछे है। हाँ यह सही है कि पिछले तीन चार सालों में हम कुछ कदम आगे बढ़े हैं लेकिन इन देशों से अभी भी हमारा फासला काफी है। इसलिए आवश्यक है कि भारत में वैज्ञानिक अनुसंधानों और वैज्ञानिकों दोनों को प्रोत्साहन दिया जाए टेक्नोलॉजी पर रिसर्च को फोकस किया जाए।

शिक्षा नीति में ठोस बदलाव किए जाएं ताकि कॉलेज से निकलने वाले युवाओं के हाथों में खोखली डिग्रियों की बजाए उनके दिलों में कुछ कर गुजरने का जज्बा हो। उनकी रुचि रिसर्च अनुसंधान खोज करने की ओर बढ़े और हमें अधिक से अधिक प्रतिभावान युवा वैज्ञानिक मिलें। और यह तभी संभव होगा जब हमारे देश की योग्यता से किसी प्रकार का समझौता नहीं किया जाएगा। जब प्रतिभावान युवा आरक्षण एवं भ्रष्टाचार के चलते अवसर ना मिल पाने के कारण विदेशों में चले जाने को मजबूर नहीं होंगे। दूसरे शब्दों में हमारा देश जिस ब्रेन ड्रेनेज का शिकार होता आया है उसे रोकना होगा। ताकि हम भविष्य के सुंदर पिचाई और सत्या नडेला जैसे युवाओं को भारत में रोक सकें।

आज से अगर हम इन दिशाओं में सोचेंगे तो कम से कम पांच छह सालों में हम अपनी कमजोरियों पर विजय प्राप्त कर के आत्मनिर्भर भारत का स्वप्न साकार कर पाएंगे।

गलवान घाटी में चीनी सैनिकों और भारतीय सैनिकों के मध्य खूनी संघर्ष से उपजी स्थिति पर आजकल देश में लगातार बहस चल रही है। भारत में नियमित अंतराल पर आम चुनाव होते रहते हैं और चुनावों में ऐसे संघर्ष मुद्दे भी बनते रहे हैं। भारतीय जवानों की यह शहादत भी मीडिया के पटल पर आजकल टीवी चैनलों के लिए टीआरपी बटोरने का काम कर रही है। एक तरफ सत्ताधारी दल के लिए यह चुनौती भरा समय है तो दूसरी तरफ विपक्षी पार्टियों के लिए एक सुनहरा मौका जिससे सत्ताधारी दल को संकट में डाला जा सके। पूर्वग्रह से ग्रसित टेलीविजन की आक्रामक बहस राजनेताओं को अपनी-अपनी पार्टियों के प्रमुखों को यह दिखाने के प्रयास में है कि मेरी बहस सबसे अच्छी थी। सतही स्तर तक पहुँचती इन बहसों का परिणाम व्यक्तिगत आरोप-प्रत्यारोप तक ही सिमट जाता है। सत्ताधारी दल भाजपा ने अपने को चीनी आक्रमण विवाद में घिरता देख मुख्य विपक्षी पार्टी कांग्रेस के दो प्रमुख नेताओं पर व्यक्तिगत आरोप लगाया है कि उनके द्वारा संचालित राजीव गांधी फाउंडेशन ने प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष और चीनी दूतावास से सहायता राशि प्राप्त की है, कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी राजीव गांधी फाउंडेशन की चेयरपर्सन के साथ ही साथ प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष की भी पदेन सदस्य हैं। यह आरोप इसलिए भी गंभीर है कि जब प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष से राजीव गांधी फाउंडेशन को आरोपित सहायता दी गई थी उस समय तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह भी राजीव गांधी फाउंडेशन के सदस्य थे। दूसरी तरफ इन आरोपों से तिलमिलाई कांग्रेस पार्टी के प्रवक्ताओं ने सत्ताधारी दल के नेताओं पर चीनी संबंधों के साथ-साथ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को भी विवाद में घेरने का प्रयास किया है। यह कोई नई बात भी नहीं है। जब भी कांग्रेस या अन्य विपक्षी पार्टियों द्वारा भाजपा को घेरने का प्रयास किया जाता रहा है तब-तब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के ऊपर भी ऐसे आरोप लगाए जाते रहे हैं। कालांतर में भी कांग्रेस पार्टी द्वारा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भाजपा को वोटों की राजनीति के चलते एक ही दिखाने का प्रयास किया जाता रहा है।

यदि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मूल में जाया जाए तो यह विशुद्ध रूप से एक सांस्कृतिक संगठन है जो समाज का संगठन करने के लिए बनाया गया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को अपने बढ़ते प्रभाव के कारण सत्ता का प्रतिरोध भी झेलना पड़ा है। संघ के ऊपर तीन-तीन बार प्रतिबंध भी लगाए गए। पहला प्रतिबंध गांधी जी की हत्या के बाद 1948 में लगाया गया। आपातकाल के दौरान संघ के ऊपर 4 जुलाई 1975 को प्रतिबंध लगाया गया। आपातकाल के दौरान सबसे ज्यादा बंदी संघ के कार्यकर्ता ही थे। तीसरी बार 1992 में जब बाबरी मस्जिद विध्वंस हुआ तब संघ के ऊपर प्रतिबंध लगा। लेकिन प्रत्येक प्रतिबंध के बाद संघ मजबूती से समाज के सामने आता रहा। गांधी जी की हत्या के बाद गृह मंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल के कहने पर संघ ने अपना संविधान भी बनाया और तब से संघ अपने संविधान के अनुसार ही चलता रहा है, प्रत्येक 3 वर्ष में संघ के आंतरिक चुनाव भी होते हैं। यह भी कटु सत्य है कि सुभाष चंद्र बोस, महात्मा गांधी, जयप्रकाश नारायण, सभी ने संघ के कार्यों की प्रशंसा की है। संघ की प्रशंसा करते हुए 1962 की परेड में प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों को परेड के लिए आमंत्रित किया था। रूस यात्रा के दौरान इंदिरा गांधी से जब वहां की मीडिया ने प्रश्न किया था कि आपके देश में कोई सामाजिक संगठन है, तब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का नाम ही इंदिरा गांधी ने लिया था। यानी जब-जब प्रामाणिकता की बात आती है तब-तब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की चर्चा ही राजनेताओं के द्वारा की जाती रही है।

आरजीएफ की तरह चंदा नहीं लेता आरएसएस संघ को विवाद में घसीटना कांग्रेस का पुराना शौक है



जब भी कांग्रेस या अन्य विपक्षी पार्टियों द्वारा भाजपा को घेरने का प्रयास किया जाता रहा है तब-तब संघ के ऊपर भी ऐसे आरोप लगाए जाते रहे हैं। कालांतर में भी कांग्रेस पार्टी द्वारा संघ और भाजपा को वोटों की राजनीति के चलते एक ही दिखाने का प्रयास किया जाता रहा है।

आज कोरोना काल में जब एक दूसरे को छूने से लोग डर रहे हैं, उस दौरान राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अनुषांगिक संगठन सेवा भारती ने लाखों सेवा प्रकल्प चलाकर कोरोना पीड़ितों की, असहाय लोगों की, निर्धन लोगों की मदद की है। जिसकी प्रशंसा संघ विरोधी पत्रकारों ने भी अपने चैनलों पर की है। आज संघ समाज में विश्वास जमाने में सफल हुआ है। संघ के कार्यकर्ताओं द्वारा लगातार किए जा रहे सेवा कार्य ने समाज में उसकी विश्वसनीयता को और मजबूत किया है।

संघ की सोच शुरू से यही रही है कि संघ जितना बढ़ता जाएगा, समाज में उतना ही समाहित होता जाएगा। संघ समाज में उसी तरह घुल-मिल जाएगा जैसे दूध में शक्कर। संघ के सरसंघचालक भी लगातार यह कहते रहे हैं कि संघ समाज में कोई संगठन करने के लिए नहीं बल्कि समाज का संगठन करने के लिए शुरू किया गया है। इसलिए संघ हमेशा पीछे रहकर काम करता रहा और समाज को आगे रखता रहा है। इसी सोच के कारण राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने कभी अपने नाम से किसी सामाजिक कार्य को आगे नहीं बढ़ाया बल्कि उसके अनुषांगिक संगठनों ने आगे आकर विभिन्न क्षेत्रों में कमान संभाल ली। सेवा क्षेत्र में सेवा भारती, मजदूरों के क्षेत्र में अखिल भारतीय मजदूर संघ, राष्ट्रीय किसान संघ, अखिल भारतीय अधिवक्ता परिषद, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, अखिल भारतीय बनवास कल्याण आश्रम, शिक्षा के क्षेत्र में काम करने के लिए विद्या भारती इत्यादि सैंकड़ों संगठनों ने समाज में एक अलग ही पहचान बनाई है। पूर्वोत्तर राज्यों में एकल विद्यालय के माध्यम से पूर्वोत्तर के नागरिकों में राष्ट्रवाद

का बीज बोने का काम भी संघ के कार्यकर्ता लगातार कर रहे हैं।

संघ शुरू से ही सरकारी सहायता प्राप्त करने के विरुद्ध रहा है। पुरानी बात है जब अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम ने वनवासी क्षेत्रों में सेवा कार्य के लिए सरकारी सहायता की अपेक्षा की थी, परंतु सरकारी सहायता न मिलने से कार्यकर्ता निराश हो गए। तब यह बात उन्होंने तत्कालीन सरसंघचालक श्री गुरु जी को बताई थी। श्री गुरु जी ने यह सुनते ही ठहाका लगाते हुए जोर से कहा 'चलो अच्छा हुआ, अब जनता जनार्दन के पास जाएंगे'।

श्री गुरु जी ने तब जनता से सीधे सहायता देने का आग्रह किया था और रामनवमी के दिन ही 10-12 करोड़ रुपए जमा हो गए थे और वनवासी कल्याण आश्रम ने अपना कार्य प्रारंभ कर दिया था। बताते हैं कि तभी से संघ के किसी भी अनुषांगिक संगठन ने सरकारी सहायता प्राप्त करने का प्रयास नहीं किया। आज संघ के कार्यों को समाज में प्रचारित प्रसारित करने के लिए संघ के पास 3000 के आसपास पूर्णकालिक प्रचारक हैं। देशभर में संघ के कार्यालयों के रख रखाव, सेवा कार्य और प्रचारकों के दैनिक खर्च संघ के स्वयंसेवकों द्वारा वर्ष में एक बार की जाने वाले गुरु दक्षिणा की राशि से ही चलता रहा है।

वर्तमान चीनी संघर्ष के विवाद में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को घसीटते हुए कांग्रेस के प्रवक्ताओं ने एक बार फिर संघ के खातों का ऑडिट न कराने व गुरु दक्षिणा पर भी सवाल उठाया है। संघ विरोधियों द्वारा संघ की गुरु दक्षिणा पर प्रश्नचिन्ह पहली बार नहीं लगाया गया है। पहले भी यह सवाल खड़े किये गये

थे और यह भी कहा गया कि यह राशि आयकर के अधीन है। सरकार ने भी संघ के ऊपर दबाव बनाने के लिए गुरु दक्षिणा की राशि पर आयकर देने का नोटिस भिजवाया था। जिसे चुनौती दी गई और मुंबई (1975-1976) और पटना (1980) के आयकर अधिकरण ने सरकारी नोटिस को निरस्त कर दिया था। लेकिन पटना उच्च न्यायालय में इसके विरुद्ध अपील की गई 'आयुक्त आयकर बनाम राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' (1994 (42) BLJR 969)% के नाम से दायर इस वाद को पारस्परिकता के सिद्धांत के आधार पर 22 फरवरी 1994 को न्यायमूर्ति के परिपूर्णन और न्यायमूर्ति एनके सिन्हा की पीठ ने खारिज कर दिया था। इस निर्णय को आज तक उच्चतम न्यायालय में चुनौती नहीं दी गई। यह साबित करता है कि सरकार का मंतव्य केवल राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को परेशान करने का था। न्यायालय ने संघ के स्वयंसेवकों की गुरुदक्षिणा राशि को पारस्परिक सहयोग की राशि माना, जिसके माध्यम से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ समाज के संगठन का कार्य कर रहा है।

चीनी संघर्ष विवाद के वर्तमान परिदृश्य में सत्ताधारी दल और विपक्ष के वाद विवाद में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को अनायास घसीटना न्यायोचित प्रतीत नहीं होता। संघ का अनुषांगिक संगठन स्वदेशी जागरण मंच शुरू से ही स्वदेशी सामानों के प्रयोग हेतु जनमानस तैयार करता रहा है और एक बार फिर चीनी सामानों के बहिष्कार के लिए अलग जगा रखी है। ऐसे में इस समय संघ के राष्ट्रवाद पर प्रश्नचिन्ह खड़ा करके कांग्रेस पार्टी ने एक बार फिर खुद को कटघरे में खड़ा कर दिया है।

पुरानी बात है जब अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम ने वनवासी क्षेत्रों में सेवा कार्य के लिए सरकारी सहायता की अपेक्षा की थी, परंतु सरकारी सहायता न मिलने से कार्यकर्ता निराश हो गए। तब यह बात उन्होंने तत्कालीन सरसंघचालक श्री गुरु जी को बताई थी। श्री गुरु जी ने यह सुनते ही ठहाका लगाते हुए जोर से कहा 'चलो अच्छा हुआ, अब जनता जनार्दन के पास जाएंगे'। श्री गुरु जी ने तब जनता से सीधे सहायता देने का आग्रह किया था और रामनवमी के दिन ही 10-12 करोड़ रुपए जमा हो गए थे और वनवासी कल्याण आश्रम ने अपना कार्य प्रारंभ कर दिया था। बताते हैं कि तभी से संघ के किसी भी अनुषांगिक संगठन ने सरकारी सहायता प्राप्त करने का प्रयास नहीं किया। आज संघ के कार्यों को समाज में प्रचारित प्रसारित करने के लिए संघ के पास 3000 के आसपास पूर्णकालिक प्रचारक हैं। देशभर में संघ के कार्यालयों के रख रखाव, सेवा कार्य और प्रचारकों के दैनिक खर्च संघ के स्वयंसेवकों द्वारा वर्ष में एक बार की जाने वाले गुरु दक्षिणा की राशि से ही चलता रहा है।

चीन ने एक बार फिर से भारत को धोखा दिया है। चीन ने एक बार फिर से यह साबित किया है कि यह देश भरोसे के लायक कतई नहीं है। 50 के दशक में हिंदी चीनी भाई भाई का नारा देकर 1962 में हमारे पीठ में खंजर घोंपने वाले चीन ने एक बार फिर से अपने नापाक इरादों को दिखा दिया है। हालांकि 1962 से लेकर 2020 तक सब कुछ बदल गया है। आज का भारत न तो 1962 का भारत है और न ही आज की दुनिया 1962 की दुनिया है। हालांकि यह भी एक कड़वी सच्चाई है कि इस बीच सिर्फ एक चीज नहीं बदली है और वो है चीन की नापाक हरकत। चीन आज भी 50-60 के दशक के मुग़ालते में जी रहा है और इसलिए वो लगातार भारत की पीठ में खंजर भोंकने का प्रयास कर रहा है।

चीनी सेना ने पीछे से किया वार- यह शांति का कैसा राग ?

पूर्वी लद्दाख की गलवान घाटी में भी पिछले दिनों चीन ने एक बार फिर से भारत को धोखा देने का प्रयास किया। बातचीत के लिए गए भारतीय सेना के अधिकारी पर धोखे से वार किया। हमला किया वो भी पीछे से और रॉड से। धोखे से हुए हमले के बावजूद बहादुर भारतीय सैनिकों ने करारा जवाब दिया। हमारे 20 जवान शहीद हो गए लेकिन चीन के 43 सैन्य अधिकारी और जवान या तो मारे गए या फिर बुरी तरह से घायल हो गए। चीन सही आंकड़ा दुनिया से छुपा रहा है लेकिन यह बताया जा रहा है कि भारतीय सेना ने चीन को बहुत बड़ी क्षति पहुंचाई है इसलिए बिलबिलाया हुआ चीन बार-बार भारत पर आरोप लगा रहा है और शांति का राग अलाप रहा है।

भारत शांति का पक्षधर लेकिन उकसाने पर देगा करारा जवाब

चीन के धोखे का जवाब तो भारतीय सेना ने बार्डर पर ही तुरंत दे दिया लेकिन इस बार सरकार भी चुप नहीं बैठने वाली है। यही वजह है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी लगातार CCS की बैठक ले रहे हैं। रक्षा मंत्री CDS और तीनों सेनाओं के प्रमुखों के साथ बातचीत कर रहे हैं। लगातार बैठकें हो रही हैं और इसके बाद सेना के तीनों अंगों को हाई-अलर्ट पर डाल दिया गया है। भारत ने यह साफ कर दिया है कि वो अपनी तरफ से लड़ाई की पहल नहीं करेगा लेकिन चीन के इस धोखे को बर्दास्त भी नहीं करेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी चीनी सेना के साथ हुई झड़प में शहीद हुए सैनिकों को नमन करते हुए कहा है कि उनका बलिदान व्यर्थ नहीं जाएगा। पीएम मोदी ने मुख्यमंत्रियों के साथ बैठक की शुरुआत करते हुए देश को भरोसा दिया कि हमारे जवानों का बलिदान व्यर्थ नहीं जाएगा। उन्होंने साफ किया कि भारत की अखंडता और संप्रभुता सर्वोच्च है और इसकी रक्षा हर कीमत पर की जाएगी। शांति को लेकर भारत की प्रतिबद्धता को एक बार फिर से जाहिर करते हुए मोदी ने कहा कि भारत शांति चाहता है लेकिन उकसाने पर हर हाल में यथोचित जवाब देने में हम सक्षम हैं।

6 साल 18 मुलाकात लेकिन फिर भी चीन का वही है हाल

चीन के साथ विवादों को बातचीत के जरिए सुलझाना हमेशा से ही भारत का मूल मंत्र रहा है। 1962 में धोखा खाने के बावजूद हमने कभी भी युद्ध को भड़काने की कोशिश नहीं की। 2014 में सत्ता परिवर्तन के बाद से भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच पिछले 6 सालों में 18 बार मुलाकात हो चुकी है। कई बार दोनों नेताओं के बीच वन टू वन की मुलाकात हुई है तो कई बार महत्वपूर्ण अंतराष्ट्रीय सम्मेलनों में भी दोनों नेताओं के बीच चर्चा हुई। बातचीत में हर बार चीन शांति का राग

ही अलापता नजर आया लेकिन कोई यह नहीं जानता था कि इस बार भी चीन के मन में वही नापाक इरादें पनप रहे हैं जो वह 1962 में दिखा चुका है।

चीन को सबक सिखाना जरूरी

चीन की नापाक मंशा पर भारत ने साफ कर दिया है कि इस बार करारा जवाब दिया जाएगा और यह जरूरी भी है। इस बार चीन को सबक सिखाना ही चाहिए। कोरोना वायरस को दुनियाभर में फैलाने के लिए जिम्मेदार चीन वैश्विक स्तर पर विलेन बन चुका है। अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया सहित तमाम यूरोपीय देश चीन की भूमिका को लेकर क्षुब्ध हैं और कार्रवाई चाहते हैं। चीन अपनी विश्वसनियता, अंतर्राष्ट्रीयता मान्यता और व्यापारिक दृष्टि से

अपने सबसे बुरे दौर से गुजर रहा है। यह सही वक्त है जब चीन को सबक सिखाया जा सकता है। चीन को यह बताने का वक्त तो आ ही गया है कि यह 1962 का भारत

नहीं है। इस बार सीमा पर भारतीय सेना चीनी सेना के दांत तो खट्टे करेगी ही और साथ ही समुद्र से लेकर आकाश तक चीन को करारा जवाब दिया जाएगा। भारत को यह संकेत

जाहिर-सी बात है कि अब अंतराष्ट्रीय माहौल तेजी से बदल रहा है और इसका लाभ उठाते हुए चीन को हर मोर्चे पर अलग-थलग करने का प्रयास करना चाहिए।

1962 से 2020 तक चीन ने धोखा देने की अपनी नीति बिलकुल नहीं बदली

पूर्वी लद्दाख की गलवान घाटी में भी सोमवार रात को चीन ने एक बार फिर से भारत को धोखा देने का प्रयास किया। बातचीत के लिए गए भारतीय सेना के अधिकारी पर धोखे से वार किया। हमला किया वो भी पीछे से और रॉड से।



हिन्दुस्तान से हांगकांग तक चीन ने जाल तो बिछा दिया, लेकिन मोदी के आगे एक नहीं चली

जिस देश का नेतृत्व मजबूत होता है, उसको आंख दिखाने की हिम्मत बाहरी ताकतें नहीं जुटा पाती हैं। इस बात का अहसास उस चीन से बेहतर किसको हो सकता है, जिसके सैनिक बार-बार सीमा पार करके भारत में घुस आया करते थे। उसकी सारी हेकड़ी मोदी सरकार ने अपने सख्त रवैये से एक ही झटके में निकाल दी। चीन को मोदी सरकार के सख्त रवैये के चलते अपने सैनिकों को दो किलोमीटर पीछे ले जाने को मजबूर होना पड़ गया। हालांकि एक किलोमीटर भारतीय सेना भी पीछे आई, लेकिन यह महत्वपूर्ण नहीं था। उधर, सीमा पर तनाव के बीच भारतीय सुरक्षा एजेंसियों ने पूर्वी लद्दाख में चीनी सेना के जमावड़े पर सरकार को विस्तृत रिपोर्ट सौंप दी है। इस रिपोर्ट में बताया गया है कि चीन किस तरह इस क्षेत्र में इतनी बड़ी संख्या में फौजियों को ले आया। इस विस्तृत रिपोर्ट में दौलत बेग ओल्डी और पैगांग त्सो समेत पूर्वी लद्दाख के सभी महत्वपूर्ण जगहों पर चीनी सेना के जमावड़े का विवरण दिया गया है।

रिपोर्ट में सरकार को उन सभी बिंदुओं से जानकारी दी गई है कि कैसे चीन इतनी तेजी से इतनी बड़ी तादाद में अपनी सैनिकों को इन मोर्चों पर ले आया। मई के पहले सप्ताह में चीन ने पूर्वी लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा पर अपने पांच हजार सैनिक तैनात कर दिए थे। चीन ने अचानक इतनी बड़ी तादाद में सैनिक तैनात करके भारतीय पक्ष को चैंका दिया था। इसके बाद भारत ने भी ऊंचाई पर लड़ाई में प्रशिक्षित अपनी रिजर्व टुकड़ियों को फौरन यहां तैनात किया। ये टुकड़ियां लद्दाख में मौजूद सैनिकों के अतिरिक्त हैं। मई के पहले सप्ताह से वास्तविक नियंत्रण रेखा पर भारतीय क्षेत्र में घुसपैठ करके बैठे चीनी सैनिकों की स्थिति में धरातल पर कोई बदलाव नहीं दिख रहा है। कई जगहों पर चीनी और भारतीय सैनिक आमने-सामने हैं।

ऐसा माना जा रहा है कि चीनी सैनिक भारतीय क्षेत्र में और अंदर कब्जा जमाना चाहते थे लेकिन भारतीय सेना के समय पर सक्रिय होने से चीन का यह मंसूबा पूरा नहीं हो पाया। शनिवार को होने जा रही दोनों देशों के बीच लेफ्टीनेंट जनरल स्तर की होने जा रही बैठक से भारत और चीन इस स्थिति में बदलाव की उम्मीद कर रहे हैं। इस बीच भारत ने स्पष्ट कर दिया है कि वह अपनी सीमा को लेकर कोई समझौता नहीं करेगा। चीनी सेना लद्दाख में भारतीय सेना को मजबूत होते देख वास्तविक नियंत्रण रेखा पर विकास के प्रोजेक्टों में रोड़े अटक रही है। ऐसे में उसने भारत और चीन इस स्थिति में बदलाव की उम्मीद कर रहे हैं। इस बीच भारत ने स्पष्ट कर दिया है कि वह अपनी सीमा को लेकर कोई समझौता नहीं करेगा। चीनी सेना लद्दाख में भारतीय सेना को मजबूत होते देख वास्तविक नियंत्रण रेखा पर विकास के प्रोजेक्टों में रोड़े अटक रही है। ऐसे में उसने

भारत शांति में विश्वास करता है लेकिन जब उसकी क्षेत्रीय अस्मिता की रक्षा पर संकट आएगा तो वह पूरी दृढ़ता और संकल्प से इसका जवाब देगा। भारत का यह रुख उसके द्वारा चीन से किए गए चार समझौतों में भी झलकता है। भारत ने सबसे पहले 1993 और फिर 1996 में समझौता किया है। इसके बाद 2005 में विश्वास बहाली उपाय समझौता (सीबीएम) किया गया। इसके बाद 2013 में सीमा समझौता किया गया। इन समझौतों के बाद से सीमा विवाद सुलझाने के लिए एक तंत्र विकसित हुआ है। यह तंत्र अभी भी काफी कारगर है।

लब्बोलुआब यह है कि मोदी सरकार के सख्त रवैये के चलते चीन अपनी हेकड़ी छोड़कर बातचीत की टेबल पर बैठ कर भारत से सीमा विवाद सुलझाने को तैयार हो गया है। असल में चीन लम्बे समय से खासकर 2014 में मोदी सरकार बनने के बाद भारत को लेकर काफी संवेदनशील हो गया है। प्रधानमंत्री

नरेन्द्र मोदी की जिस तरह से पूरी दुनिया में स्वीकार्यता बड़ रही है उससे चीन बेचैन हो उठा है। भले ही चीन के राष्ट्रपति ने तमाम मौकों पर भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ दोस्ती का दंभ भरने में संकोच नहीं किया हो, लेकिन भारत के प्रति चीन का नजरिया न पहले बदला था, न अब कोई बदलाव देखने को मिल रहा है। वह लगातार अरूणाचल प्रदेश, सिक्किम आदि राज्यों सहित भारत के कई हिस्सों में अपनी दावेदारी जताता रहा है। मोदी के सख्त रवैये के बाद चीन सीमाओं पर दावेदारी के मामले में तो बैकफुट पर नजर आ ही रहा है, वहीं मोदी की 'मेड इन इंडिया', 'लोकल के लिए वोकल' जैसी सोच से भी चीन के हितों का नुकसान हो रहा है। रही सही कसर कोराना को लेकर चीन की मक्कारी ने पूरी कर दी।

दरअसल, कोविड-19 वायरस की जानकारी विश्व के अन्य देशों से छिपाने के चलते चीन पूरी दुनिया में शर्मसार हो रहा है। विश्व बिरादरी के बीच चीन पूरी तरह से अलग-थलग पड़ गया है। कई देशों की सरकारें तो चीन से नाराज हैं ही, चीन में कारोबार कर रही विदेशी कम्पनियों का भी चीन से विश्वास उठ गया है। अगर चीन समय रहते दुनिया को कोविड-19 से अलर्ट कर देता तो लाखों लोगों की जान नहीं जाती और दुनिया भर को आर्थिक मंदी भी नहीं झेलनी पड़ती, लेकिन उसने जानबूझ कर यह बात दुनिया से छिपा कर रखी। तमाम देश चीन के इस कृत्य को मानवता के खिलाफ षड्यंत्र बता रहे हैं। कुछ देशों ने तो चीन पर मानहानि का भी दावा ठोंक दिया है। उधर, चीन अपने कृत्य पर शर्मसार होने की बजाए हांगकांग से लेकर हिन्दुस्तान तक में अवांछनीय हरकतें करने में गला है। चीन दुनिया का ध्यान कोरोना वायरस के चलते उस पर लगने वाले आरोपों से हटाने के लिए अनाप-शनाप हरकतें कर रहा है। चीन स्वयं

तो भारत के साथ सीमा विवाद बड़ा ही रहा है, नेपाल को भी वह भारत के खिलाफ उकसा रहा है। नेपाल में भी चीन की ही तरह कम्युनिस्ट पार्टी की सरकार है। नेपाल ने भी चीन के पदचिन्हों पर चलते हुए भारत के कुछ हिस्सों को अपने नक्शे में शामिल कर लिया है। चीन के साथ भारत के संबंध लगातार खराब हो रहे हैं यह बात केन्द्र की मोदी सरकार भी स्वीकार कर रही है।

बहरहाल, कोविड-19 को लेकर चीन के रवैये के चलते चीन में कारोबार कर रहीं तमाम विदेशी कम्पनियों ने वहां से कारोबार समेटना शुरू कर दिया है। चीन से पलायन करने वाले कारोबारी अन्य देशों में नया ठिकाना तलाश रहे हैं। इन कारोबारियों को भारत लुभाने में लगा है। इससे चीन जल-भुन गया है। बात यहीं तक सीमित नहीं है। चीन को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का आम जनता से किया जाने वाला आग्रह 'स्वदेशी अपनाओं' और 'लोकल के लिए वोकल' होने का नारा भी रास नहीं आ रहा है। चीन को लग रहा है कि मोदी के सख्त तेवरों के चलते उसे (चीन) भारत में कारोबार समेटना पड़ सकता है। चीन के लिए और एक समस्या है उसका भारत के साथ लम्बे समय से चला आ रहा सीमा विवाद। जब तक केन्द्र में गैर भाजपा सरकारें सत्तारूढ़ रहीं तब तक चीन को भारतीय सीमा के इर्दगिर्द मंडराने में कोई समस्या भी नहीं आती थी, लेकिन मोदी सरकार चीन को हर मोर्चे पर मुंह तोड़ जवाब दे रही है। चीन ने सीमा पर हलचल बड़ाई तो मोदी ने उसे करारा जवाब देने में देरी नहीं की। भारत ने भी सीमा पर अपनी सेना बड़ा दी। इसी के बाद चीन के तेवर ढीले पड़ गए। कुल मिलाकर मोदी सरकार की कूटनीति और सैन्य रणनीति के चलते चीन को घुटने टेकने को मजबूर होना पड़ गया, अन्यथा तो यहां तक अटकलें लगने लगी थीं कि चीन भारत के साथ युद्ध दोहरा सकता है।

(कहानी)

सौभाग्य के कोड़े



लड़के क्या अमीर के हों, क्या गरीब के, विनोदशील हुआ ही करते हैं। उनकी चंचलता बहुधा उनकी दशा और स्थिति की परवा नहीं करती। नथुवा के माँ-बाप दोनों मर चुके थे, अनाथों की भाँति वह राय भोलानाथ के द्वार पर पड़ा रहता था। रायसाहब दयाशील पुरुष थे। कभी-कभी एक-आधा पैसा दे देते, खाने को भी घर में इतना जूठा बचता था कि ऐसे-ऐसे कई अनाथ अफर सकते थे, पहनने को भी उनके लड़कों के उतारे मिल जाते थे, इसलिए नथुवा अनाथ होने पर भी दुखी नहीं था। रायसाहब ने उसे एक ईसाई के पंजे से छुड़ाया था। इन्हें इसकी परवा न हुई कि मिशन में उसकी शिक्षा होगी, आराम से रहेगा; उन्हें यह मंजूर था कि वह हिंदू रहे। अपने घर के जूठे भोजन को वह मिशन के भोजन से कहीं पवित्र समझते थे। उनके कमरों की सफाई मिशन की पाठशाला की पढ़ाई से कहीं बढ़कर थी। हिंदू रहे, चाहे जिस दशा में रहे। ईसाई हुआ तो फिर सदा के लिए हाथ से निकल गया।

नथुवा को बस रायसाहब के बँगले में झाड़ू लगा देने के सिवाय और कोई काम न था। भोजन करके खेलता-फिरता था। कर्मनुसार ही उसकी वर्णव्यवस्था भी हो गयी। घर के अन्य नौकर-चाकर उसे भंगी कहते थे और नथुवा को इसमें कोई एतराज न होता था। नाम की स्थिति पर क्या असर पड़ सकता है, इसकी उस गरीब को कुछ खबर न थी। भंगी बनने में कुछ हानि भी न थी। उसे झाड़ू देते समय कभी पैसे पड़े मिल जाते, कभी और कोई चीज। इससे वह सिगरेट लिया करता था। नौकरों के साथ उठने-बैठने से उसे बचपन ही में तम्बाकू, सिगरेट और पान का चस्का पड़ गया।

रायसाहब के घर में यों तो बालकों और बालिकाओं की कमी न थी, दरजनों भाँजे-भतीजे पड़े रहते थे; पर उनकी निज की संतान केवल एक पुत्री थी, जिसका नाम रत्ना था। रत्ना को पढ़ाने को दो मास्टर थे, एक मेमसाहब अँग्रेजी पढ़ाने आया करती थीं। रायसाहब की यह हार्दिक अभिलाषा थी कि रत्ना सर्वगुण आगरी हो और जिस घर में जाय, उसकी लक्ष्मी बने। वह उसे अन्य बालकों के साथ न रहने देते। उसके लिए अपने बँगले में दो

कमरे अलग कर दिये थे; एक पढ़ने के लिए, दूसरा सोने के लिए। लोग कहते हैं, लाड़-प्यार से बच्चे जिद्दी और सरीर हो जाते हैं। रत्ना इतने लाड़-प्यार पर भी बड़ी सुशील बालिका थी। किसी नौकर को %रे% न पुकारती, किसी भिखारी तक को न दुत्कारती। नथुवा को वह पैसे, मिठाइयाँ दे दिया करती थी। कभी-कभी उससे बातें भी किया करती थी। इससे वह लौंडा उसके मुँह लग गया था।

एक दिन नथुवा रत्ना के सोने के कमरे में झाड़ू लगा रहा था। रतना दूसरे कमरे में मेमसाहब से अँग्रेजी पढ़ रही थी। नथुवा की शामत जो आयी तो झाड़ू लगाते-लगाते उसके मन में यह इच्छा हुई कि रत्ना के पलंग पर सोऊँ; कैसी उजली चादर बिछी हुई है, गद्दा कितना नरम और मोटा है, कैसा सुन्दर दुशाला है ! रत्ना इस गद्दे पर कितने आराम से सोती है, जैसे चिड़िया के बच्चे घोंसले में। तभी तो रत्ना के हाथ इतने गोरे और कोमल हैं, मालूम होता है, देह में रुई भरी हुई है। यहाँ कौन देखता है। यह सोचकर उसने पैर फर्श से पोछे और चटपट पलंग पर आकर लेट गया और दुशाला ओढ़ लिया। गर्व और आनंद से उसका हृदय पुलकित हो गया। वह मारे खुशी के दो-तीन बार पलंग पर उछल पड़ा। उसे ऐसा मालूम हो रहा था, मानो मैं रुई में लेटा हूँ। जिधर करवट लेता था, देह अंगुल-भर नीचे धँस जाती थी। यह स्वर्गीय सुख मुझे कहाँ नसीब ! मुझे भगवान् ने रायसाहब का बेटा क्यों न बनाया ? सुख का अनुभव होते ही उसे अपनी दशा का वास्तविक ज्ञान हुआ और चित्त क्षुब्ध हो गया। एकाएक रायसाहब किसी जरूरत से कमरे में आये तो नथुवा को रत्ना के पलंग पर लेटे देखा। मारे क्रोध के जल उठे। बोले- क्यों बे सुअर, तू यह क्या कर रहा है ?

नथुवा ऐसा घबराया मानो नदी में पैर फिसल पड़े हों। चारपाई से कूद कर अलग खड़ा हो गया और फिर झाड़ू हाथ में ले ली।

रायसाहब ने फिर पूछ- यह क्या कर रहा था, बे ?

नथुवा- कुछ तो नहीं सरकार !

रायसाहब- अब तेरी इतनी हिम्मत हो गयी है कि रत्ना की चारपाई पर सोये ? नमकहराम कहीं का ! लाना मेरा हँटर।

हँटर मँगवाकर रायसाहब ने नथुवा को खूब पीटा। बेचारा हाथ जोड़ता था, पैरों पड़ता था, मगर रायसाहब का क्रोध शांत होने का नाम न लेता था। सब नौकर जमा हो गये और नथुवा के जले पर नमक छिड़कने लगे। रायसाहब का क्रोध और भी बढ़ा। हँटर हाथ से फेंककर ठोकरों से मारने लगे। रत्ना ने यह रोना सुना तो दौड़ी हुई आयी और समाचार सुनकर बोली- दादाजी बेचारा मर जायगा; अब इस पर दया कीजिए।

रायसाहब- मर जायगा, उठवाकर फेंकवा दूँगा। इस बदमाशी का मजा तो मिल जायगा।

रत्ना- मेरी ही चारपाई थी न, मैं उसे क्षमा करती हूँ।

रायसाहब- जरा देखो तो अपनी चारपाई की गत। पाजी के बदन की मैल भर गयी होगी। भला, इसे सूझी क्या ? क्यों बे, तुझे सूझी क्या ?

यह कर रायसाहब फिर लपके; मगर नथुवा आकर रत्ना के पीछे दुबक गया। इसके सिवा और कहीं शरण न थी। रत्ना ने रोककर कहा- दादाजी, मेरे कहने से अब इसका अपराध क्षमा कीजिए।

रायसाहब- क्या कहती हो रत्ना, ऐसे अपराधी कहीं क्षमा किये जाते हैं। खैर, तुम्हारे कहने पर छोड़ देता हूँ, नहीं तो आज जान लेकर छोड़ता। सुन बे, नथुवा, अपना भला चाहता है तो फिर यहाँ न आना, इसी दम निकल जा, सुअर, नालायक !

नथुवा प्राण छोड़कर भागा। पीछे फिरकर न देखा। सड़क पर पहुँचकर वह खड़ा हो गया। यहाँ रायसाहब उसका कुछ नहीं कर सकते थे। यहाँ सब लोग उनकी मुँहदेखी तो न कहेंगे। कोई तो कहेगा कि लड़का था, भूल ही हो गयी तो क्या प्राण ले लीजिएगा ? यहाँ मारे तो देखूँ, गाली देकर भागूँगा, फिर कौन मुझे पा सकता है। इस विचार से उसकी हिम्मत

बँधी। बँगले की तरफ मुँह करके जोर से बोला- यहाँ आओ तो देखें, और फिर भागा कि कहीं रायसाहब ने सुन न लिया हो।

नथुवा थोड़ी ही दूर गया था कि रत्ना की मेम साहिबा अपने टमटम पर सवार आती हुई दिखायी दीं। उसने समझा, शायद मुझे पकड़ने आ रही हैं। फिर भागा, किंतु जब पैरों में दौड़ने की शक्ति न रही तो खड़ा हो गया। उसके मन ने कहा, वह मेरा क्या कर लेंगी, मैंने उनका कुछ बिगाड़ा है ? एक क्षण में मेम साहिबा आ पहुँचीं और टमटम रोककर बोलीं- नाथू, कहाँ जा रहे हो ?

नथुवा- कहीं नहीं।

मेम.- रायसाहब के यहाँ फिर जायगा तो वह मारेंगे। क्यों नहीं मेरे साथ चलता। मिशन में आराम से रह। आदमी हो जायगा।

नथुवा- किरस्तान तो न बनाओगी ?

मेम.- किरस्तान क्या भंगी से भी बुरा है, पागल !

नथुवा- न भैया, किरस्तान न बनूँगा।

मेम.- तेरा जी चाहे न बनना, कोई जबरदस्ती थोड़े ही बना देगा। नथुवा थोड़ी देर तक टमटम के साथ चला; पर उसके मन में संशय बना हुआ था। सहसा वह रुक गया। मेम साहिबा ने पूछ- क्यों, चलता क्यों नहीं ?

नथुवा- मैंने सुना है, मिशन में जो कोई जाता है किरस्तान हो जाता है। मैं न जाऊँगा। आप झाँसा देती हैं।

मेम.- अरे पागल, वहाँ तुझे पढ़ाया जायगा, किसी की चाकरी न करनी पड़ेगी। शाम को खेलने को छुट्टी मिलेगी। कोट-पतलून पहनने को मिलेगी। चल के दो-चार दिन देख तो ले।

नथुवा ने इस प्रलोभन का उत्तर न दिया। एक गली से होकर भागा। जब टमटम दूर निकल गया तो वह निश्चिंत होकर सोचने लगा- जाऊँ ? कहीं कोई सिपाही पकड़कर थाने न

नाथूराम ने पाँच वर्षों में विद्यालय की सर्वोच्च उपाधि प्राप्त कर ली। इसके साथ-साथ भाषा, गणित और विज्ञान में उसकी बुद्धि ने अपनी प्रखरता का परिचय दिया। अब वह समाज का भूषण था। कोई उससे न पूछता था, कौन जाति हो। उसका रहन-सहन, तौर-तरीका अब गायकों का-सा नहीं, शिक्षित समुदाय का-सा था। अपने सज्मान की रक्षा के लिए वह ऊँचे वर्णवालों का-सा आचरण रखने लगा। मंदिर-मांस त्याग दिया, नियमित रूप से संध्योपासना करने लगा। कोई कुलीन ब्राह्मण भी इतना आचार-विचार न करता होगा।

नाथूराम तो पहले ही उसका नाम हो चुका था। अब उसका कुछ और सुसंस्कार हुआ। वह ना. रा. आचार्य मशहूर हो गया। साधारणतः लोग ‘आचार्य’ ही कहा करते थे। राज-दरबार से उसे अच्छा वेतन मिलने लगा। 18 वर्ष की आयु में इतनी ज़्यादा बिरले ही किसी गुणी को नसीब होती है। लेकिन ज़्यादा-प्रेम वह प्यास है, जो कभी नहीं बुझती, वह अगस्त्य ऋषि की भाँति सागर को पीकर भी शांत नहीं होती। महाशय आचार्य ने योरोप को प्रस्थान किया।

आचार्य महाशय बड़ी दुविधा में पड़े हुए थे। उनका दिल कहता था, जिस क्षण रत्ना पर मेरी असलियत खुल जायगी, उसी क्षण वह मुझसे सदैव के लिए मुँह फेर लेगी। वह कितनी ही उदार हो, जाति के बंधन को कितना ही कष्टमय समझती हो, किंतु उस घृणा से मुक्त नहीं हो सकती जो स्वभावतः मेरे प्रति उत्पन्न होगी। मगर इस बात को जानते हुए भी उनकी हिज्मत न पड़ती थी कि अपना वास्तविक स्वरूप खोलकर दिखा दें। आह ! यदि घृणा ही तक होती तो कोई बात न थी, मगर उसे दुःख होगा, पीड़ा होगी, उसका हृदय विदीर्ण हो जायगा, उस दशा में न जाने क्या कर बैठे। उसे इस अज्ञात दशा में रखते हुए प्रणय-पाश को टूट करना उन्हें परले सिरे की नीचता प्रतीत होती थी। यह कपट है, दगा है, धूर्तता है जो प्रेमाचरण में सर्वथा निषिद्ध है। इस संकट में पड़े हुए वह कुछ निश्चय न कर सकते थे कि क्या करना चाहिए। उधर रायसाहब की आमदोरत दिनोंदिन बढ़ती जाती थी। उनके मन की बात एक-एक शब्द से झलकती थी। रत्ना का आना-जाना बंद होता जाता था जो उनके आशय को और भी प्रकट करता था।

ले जाय। मेरी बिरादरी के लोग तो वहाँ रहते हैं। क्या वह मुझे अपने घर रखेंगे। कौन बैठ कर खाऊँगा, काम तो करूँगा। बस, किसी को पीठ पर रहना चाहिए। आज कोई मेरी पीठ पर होता तो मजाल थी कि रायसाहब मुझे यों मारते। सारी बिरादरी जमा हो जाती, घेर लेती, घर की सफाई बंद हो जाती, कोई द्वार पर झाड़ू तक न लगाता। सारी रायसाहबी निकल जाती। यह निश्चय करके वह घूमता-फिरता भंगियों के मुहल्ले में पहुँचा। शाम हो गयी थी, कई भंगी एक पेड़ के नीचे चटाइयों पर बैठे शहनाई और तबल बजा रहे थे। वह नित्य इसका अभ्यास करते थे। यह उनकी जीविका थी। गान-विद्या की यहाँ जितनी छीछलेदर हुई है, उतनी और कहीं न हुई होगी। नथुवा जाकर वहाँ खड़ा हो गया। उसे बहुत ध्यान से सुनते देखकर एक भंगी ने पूछा-कुछ गाता है ?

नथुवा- अभी तो नहीं गाता; पर सिखा दोगे तो गाने लगूँगा।

भंगी- बहाना मत कर, बैठ; कुछ गाकर सुना, मालूम तो हो कि तेरे गला भी है या नहीं, गला ही न होगा तो क्या कोई सिखायेगा।

नथुवा मामूली बाजार के लड़कों की तरह कुछ-न-कुछ गाना जानता ही था, रास्ता चलता तो कुछ-न-कुछ गाने लगता था। तुरंत गाने लगा। उस्ताद ने सुना। जौहरी था, समझ गया यह काँच का टुकड़ा नहीं। बोला- कहीं रहता है ?

नथुवा ने अपनी रामकहानी सुनायी, परिचय हो गया। उसे आश्रय मिल गया और विकास का वह अवसर मिल गया, जिसने उसे भूमि से आकाश पर पहुँचा दिया।

तीन साल उड़ गये, नथुवा के गाने की सारे शहर में धूम मच गयी। और वह केवल एक गुणी नहीं, सर्वगुणी था; गाना, शहनाई बजाना, पखावज, सारंगी, तम्बूरा, सितार- सभी कलाओं में दक्ष हो गया। उस्तादों को भी उसकी चमत्कारिक बुद्धि पर आश्चर्य होता था। ऐसा मालूम होता था कि उसने पहले ही पढ़ी हुई विद्या दुहरा ली है। लोग दस-दस सालों तक सितार बजाना सीखते रहते हैं और नहीं आता, नथुवा को एक महीने में उसके तारों का ज्ञान हो गया। ऐसे कितने ही रत्न पड़े हुए हैं, जो किसी पारखी से भेंट न होने के कारण मिट्टी में मिल जाते हैं।

संयोग से इन्हीं दिनों ग्वालियर में एक संगीत-सम्मेलन हुआ। देश- देशांतरों से संगीत के आचार्य निर्मंत्रित हुए। उस्ताद घूरे को भी नेवता मिला। नथुवा इन्हीं का शिष्य था। उस्ताद ग्वालियर चले तो नाथू को भी साथ लेते गये। एक सप्ताह तक ग्वालियर में बड़ी धूमधाम रही। नाथूराम ने वहाँ खूब नाम कमाया। उसे सोने का तमगा इनाम मिला। ग्वालियर के संगीत-विद्यालय के अध्यक्ष ने उस्ताद घूरे से आग्रह किया कि नाथूराम को संगीत-विद्यालय में दाखिल करा दो। यहाँ संगीत के साथ उसकी शिक्षा भी हो जायगी। घूरे को मानना पड़ा। नाथूराम भी राजी हो गया।

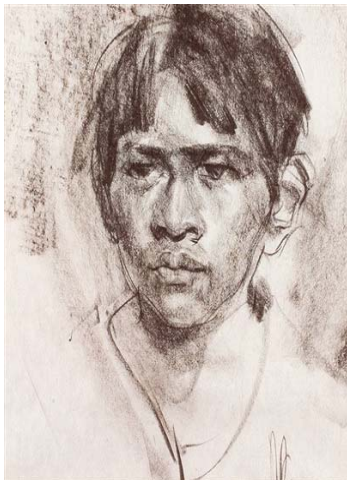
नाथूराम ने पाँच वर्षों में विद्यालय की सर्वोच्च उपाधि प्राप्त कर ली। इसके साथ-साथ भाषा, गणित और विज्ञान में उसकी बुद्धि ने अपनी प्रखरता का परिचय दिया। अब वह समाज का भूषण था। कोई उससे न पूछता था, कौन जाति हो। उसका रहन-सहन, तौर-तरीका अब गायकों का-सा नहीं, शिक्षित समुदाय का-सा था। अपने सम्मान की रक्षा के लिए वह ऊँचे वर्णवालों का-सा आचरण रखने लगा। मदिरा-मांस त्याग दिया, नियमित रूप से संध्योपासना करने लगा। कोई कुलीन ब्राह्मण भी इतना आचार-विचार न करता होगा। नाथूराम तो पहले ही उसका नाम हो चुका था। अब उसका कुछ और सुसंस्कार

हुआ। वह ना. रा. आचार्य मशहूर हो गया। साधारणतः लोग %आचार्य% ही कहा करते थे। राज-दरबार से उसे अच्छा वेतन मिलने लगा। 18 वर्ष की आयु में इतनी ख्याति बिरले ही किसी गुणी को नसीब होती है। लेकिन ख्याति-प्रेम वह प्यास है, जो कभी नहीं बुझती, वह अगस्त्य ऋषि की भाँति सागर को पीकर भी शांत नहीं होती। महाशय आचार्य ने योरोप को प्रस्थान किया। वह पाश्चात्य संगीत पर भी अधिकृत होना चाहते थे। जर्मनी के सबसे बड़े संगीत-विद्यालय में दाखिल हो गये और पाँच वर्षों के निरंतर परिश्रम और उद्योग के बाद आचार्य की पदवी लेकर इटली की सैर करते हुए ग्वालियर लौट आये और उसके एक ही सप्ताह के बाद मदन कम्पनी ने उन्हें तीन हजार रुपये मासिक वेतन पर अपनी शाखाओं का निरीक्षक नियुक्त किया। वह योरोप जाने के पहले ही हजारों रुपये जमा कर चुके थे। योरोप में भी ओपराओं और नाट्यशालाओं में उनकी खूब आवभगत हुई थी। कभी-कभी एक दिन में इतनी आमदनी हो जाती थी, जितनी यहाँ के बड़े-से-बड़े गवैयों को बरसों में भी नहीं होती। लखनऊ से विशेष प्रेम होने के कारण उन्होंने वहीं निवास करने का निश्चय किया।

आचार्य महाशय लखनऊ पहुँचे तो उनका चित्त गदगद हो गया। यहाँ उनका बचपन बीता था, यहीं एक दिन वह अनाथ थे, यहीं गलियों में कनकौए लूटते फिरते थे, यहीं बाजारों में पैसे माँगते-फिरते थे। आह ! यहीं उन पर हँटरों की मार पड़ी थी, जिसके निशान अब तक बने थे। अब वह दाग उन्हें सौभाग्य की रेखाओं से भी प्रिय लगते। यथार्थ में यह कोड़े की मार उनके लिए शिव का वरदान थी। रायसाहब के प्रति अब उनके दिल में क्रोध या प्रतिकार का लेशमात्र भी न था। उनकी बुराइयाँ भूल गयी थीं, भलाईयाँ याद रह गयी थीं; और रत्ना तो उन्हें दया और वात्सल्य की मूर्ति-सी याद आती। विपत्ति पुराने घावों को बढ़ाती है, सम्पत्ति उन्हें भर देती है ! गाड़ी से उतरे तो छाती धड़क रही थी। 10 वर्ष का बालक 23 वर्ष का जवान, शिक्षित भद्र युवक हो गया था। उसकी माँ भी उसे देखकर न कह सकती कि यही मेरा नथुवा है। लेकिन उनकी कायापलट की अपेक्षा नगर की कायापलट और भी विस्मयकारी थी। यह लखनऊ नहीं, कोई दूसरा ही नगर था।

स्टेशन से बाहर निकलते ही देखा कि शहर के कितने ही छोटे-बड़े आदमी उनका स्वागत करने को खड़े हैं। उनमें एक युवती रमणी थी, जो रत्ना से बहुत मिलती थी। लोगों ने उससे हाथ मिलाया और रत्ना ने उनके गले में फूलों का हार डाल दिया। यह विदेश में भारत का नाम रोशन करने का पुरस्कार था। आचार्य के पैर डगमगाने लगे, ऐसा जान पड़ता था, अब नहीं खड़े रह सकते। यह वही रत्ना है। भोली-भाली बालिका ने सौंदर्य, लज्जा, गर्व और विनय की देवी का रूप धारण कर लिया है। उनकी हिम्मत न पड़ी कि रत्ना की तरफ सीधी आँखों देख सकें।

लोगों से हाथ मिलाने के बाद वह उस बँगले में आये जो उनके लिए पहले ही से सजाया गया था। उसको देखकर वे चौंक पड़े; यह वही बँगला था जहाँ रत्ना के साथ वह खेले थे; सामान भी वही था, तसवीरें वही, कुर्सियाँ और मेजें वही, शीशे के आलात वही, यहाँ तक कि फर्श भी वही था। उसके अंदर कदम रखते हुए आचार्य महाशय के हृदय में कुछ वही भाव जागृत हो रहे थे, जो किसी देवता



के मंदिर में जाकर धर्मपरायण हिंदू के हृदय में होते हैं। वह रत्ना के शयनागार में पहुँचे तो उनके हृदय में ऐसी ऐंठन हुई कि आँसू बहने लगे- यह वही पलंग है, वही बिस्तर और वही फर्श ! उन्होंने अधीर होकर पूछा- यह किसका बँगला है ?

कम्पनी का मैनेजर साथ था, बोला- एक राय भोलानाथ हैं, उन्हीं का है।

आचार्य- रायसाहब कहाँ गये ?

मैनेजर- खुदा जाने कहाँ चले गये। यह बँगला कर्ज की इल्लत में नीलाम हो रहा था। मैंने देखा हमारे थियेटर से करीब है। अधिकारियों से खतोकिताबत की और इसे कम्पनी के नाम खरीद लिया, 40 हजार में यह बँगला सामान समेत लिया गया।

आचार्य- मुफ्त मिल गया, तुम्हें रायसाहब की कुछ खबर नहीं ?

मैनेजर- सुना था कि कहीं तीर्थ करने गये थे, खुदा जाने लौटे या नहीं।

आचार्य महाशय जब शाम को सावधान होकर बैठे तो एक आदमी से पूछा- क्यों जी, उस्ताद घूरे का भी हाल जानते हो, उनका नाम बहुत सुना है।

आदमी ने सकरुण भाव से कहा- खुदाबंद, उनका हाल कुछ न पूछिए, शराब पीकर घर आ रहे थे, रास्ते में बेहोश होकर सड़क पर गिर पड़े। उधर से एक मोटर

लारी आ रही थी। ड्राइवर ने देखा नहीं, लारी उनके ऊपर से निकल गयी। सुबह को लाश मिली। खुदाबंद, अपने फन में एक था, अब उसकी मौत से लखनऊ वीरान हो गया, अब ऐसा कोई नहीं रहा जिस पर लखनऊ को घमंड हो। नथुवा नाम के एक लड़के को उन्होंने कुछ सिखाया था और उससे हम लोगों को उम्मीद थी कि उस्ताद का नाम जिंदा रखेगा, पर वह यहाँ से ग्वालियर चला गया, फिर पता नहीं कि कहाँ गया।

आचार्य महाशय के प्राण सूखे जाते थे कि अब बात खुली, अब खुली, दम रुका हुआ था जैसे कोई तलवार लिये सिर पर खड़ा हो। बारे कुशल हुई, घड़ा चोट खाकर भी बच गया।

आचार्य महाशय उस घर में रहते थे, किन्तु उसी तरह जैसे कोई नयी बहू अपने ससुराल में रहे। उनके हृदय से पुराने संस्कार न मिटते थे। उनकी आत्मा इस यथार्थ को स्वीकार न करती कि अब यह मेरा घर है। वह जोर से हँसते तो सहसा चौंक पड़ते। मित्रगण आकर शोर मचाते तो उन्हें एक अज्ञात शंका होती थी। लिखने-पढ़ने के कमरे में शायद वह सोते तो उन्हें रात-भर नींद न आती, यह खयाल दिल में जमा हुआ था कि यह पढ़ने-लिखने का कमरा है। बहुत अच्छा होने पर भी वह पुराने सामान को बदल न सकते थे। और रत्ना के शयनागार को तो उन्होंने फिर कभी नहीं खोला। वह ज्यों-का-त्यों बंद पड़ा रहता था। उसके अंदर जाते हुए उनके पैर थरथराने लगते थे। उस पलंग पर सोने का ध्यान ही उन्हें नहीं आया।

लखनऊ में कई बार उन्होंने विश्वविद्यालय में अपने संगीत-नैपुण्य का चमत्कार दिखाया। किसी राजा-रईस के घर अब वह गाने न जाते थे, चाहे कोई उन्हें लाखों रुपये ही क्यों

न दे; यह उनका प्रण था। लोग उनका अलौकिक गान सुनकर अलौकिक आनंद उठाते थे।

एक दिन प्रातःकाल आचार्य महाशय संध्या से उठे थे कि राय भोलानाथ उनसे मिलने आये। रत्ना भी उनके साथ थी। आचार्य महाशय पर रोब छा गया। बड़े-बड़े योरोपी थियेटरों में भी उनका हृदय इतना भयभीत न हुआ था। उन्होंने जमीन तक झुककर रायसाहब को सलाम किया। भोलानाथ उनकी नम्रता से कुछ विस्मृति-से हो गये। बहुत दिन हुए जब लोग उन्हें सलाम किया करते थे। अब तो जहाँ जाते थे, हँसी उड़ाई जाती थी। रत्ना भी लज्जित हो गयी। रायसाहब ने कातर नेत्रों से इधर-उधर देखकर कहा- आपको यह जगह तो पसन्द आयी होगी ?

आचार्य- जी हाँ, इससे उत्तम स्थान की तो मैं कल्पना ही नहीं कर सकता।

भोलानाथ- यह मेरा ही बँगला है। मैंने ही इसे बनवाया और मैंने ही इसे बिगाड़ भी दिया।

रत्ना ने झेंपते हुए कहा- दादाजी, इन बातों से क्या फायदा ?

भोला- फायदा नहीं है बेटी, नुकसान भी नहीं। सज्जनों से अपनी विपत्ति कहकर चित्त शांत होता है। महाशय, यह मेरा ही बँगला है, या यों कहिए कि था। 50 हजार सालाना इलाके से मिलते थे। कुछ आदमियों की संगत में मुझे सट्टे का चस्का पड़ गया। दो-तीन बार ताबड़-तोड़ बाजी हाथ आयी, हिम्मत खुल गयी, लाखों के वारे-न्यारे होने लगे, किंतु एक ही घाटे में सारी कसर निकल गयी। बधिया बैठ गयी। सारी जायदाद खो बैठा। सोचिए, पचीस लाख का सौदा था। कौड़ी चित्त पड़ती तो आज इस बँगले का कुछ और ही ठाट होता, नहीं तो अब पिछले दिनों को याद कर-करके हाथ मलता हूँ। मेरी रत्ना को आपके गाने से बड़ा प्रेम है। जब देखो आप ही की चर्चा किया करती है। इसे मैंने बी.ए. तक पढ़ाया ...

रत्ना का चेहरा शर्म से लाल हो गया। बोली- दादाजी, आचार्य महाशय मेरा हाल जानते हैं, उनको मेरे परिचय की जरूरत नहीं। महाशय, क्षमा कीजिएगा, पिताजी उस घाटे के कारण कुछ अव्यवस्थित चित्त-से हो गये हैं। वह आपसे यह प्रार्थना करने आये हैं कि यदि आपको कोई आपत्ति न हो तो वह कभी-कभी इस बँगले को देखने आया करें। इससे उनके आँसू पुछ जायेंगे। उन्हें इस विचार से सन्तोष होगा कि मेरा कोई मित्र इसका स्वामी है। बस, यही कहने के लिए यह आपकी सेवा में आये हैं।

आचार्य ने विनयपूर्ण शब्दों में कहा- इसके पूछने की जरूरत नहीं है। घर आपका है, जिस वक्त जी चाहे शौक से आयें, बल्कि आपकी इच्छा हो तो आप इसमें रह सकते हैं; मैं अपने लिए कोई दूसरा स्थान ठीक कर लूँगा।

रायसाहब ने धन्यवाद दिया और चले गये। वह दूसरे-तीसरे यहाँ जरूर आते और घंटों बैठे रहते। रत्ना भी उनके साथ अवश्य आती, फिर कुछ दिन बाद प्रतिदिन आने लगे।

एक दिन उन्होंने आचार्य महाशय को एकांत में ले जाकर पूछा- क्षमा कीजिएगा, आप अपने बाल बच्चों को क्यों नहीं बुला लेते? अकेले तो आपको बहुत कष्ट होता होगा।

आचार्य- मेरा तो अभी विवाह नहीं हुआ और न करना चाहता हूँ।

यह कहते ही आचार्य महाशय ने आँखें नीची

पृष्ठ ९ का शेष...प्रेरणा....

कर लीं।

भोलानाथ- यह क्यों, विवाह से आपको क्यों द्वेष है ?

आचार्य- कोई विशेष कारण तो नहीं बता सकता, इच्छा ही तो है।

भोला- आप ब्राह्मण हैं ?

आचार्यजी का रंग उड़ गया। सशंक होकर बोले- योरोप की यात्रा के बाद वर्णभेद नहीं रहता। जन्म से चाहे जो कुछ हूँ, कर्म से तो शूद्र ही हूँ।

भोलानाथ- आपकी नम्रता को धन्य है, संसार में ऐसे सज्जन लोग भी पड़े हुए हैं, मैं भी कर्मों ही से वर्ण मानता हूँ। नम्रता, शील, विनय, आचार, धर्मनिष्ठा, विद्याप्रेम, यह सब ब्राह्मणों के गुण हैं और मैं आपको ब्राह्मण ही समझता हूँ। जिसमें यह गुण नहीं, वह ब्राह्मण नहीं; कदापि नहीं। रत्ना को आपसे बड़ा प्रेम है। आज तक कोई पुरुष उसकी आँखों में नहीं जँचा, किंतु आपने उसे वशीभूत कर लिया इस धृष्टता को क्षमा कीजिएगा, आपके माता-पिता ...

आचार्य- मेरे माता-पिता तो आप ही हैं। जन्म किसने दिया, यह मैं स्वयं नहीं जानता। मैं बहुत छोटा था तभी उनका स्वर्गवास हो गया।

रायसाहब- आह ! वह आज जीवित होते तो आपको देखकर उनकी गज-भर की छाती होती। ऐसे सपूत बेटे कहाँ होते हैं !

इतने में रत्ना एक कागज लिये हुए आयी और रायसाहब से बोली- दादाजी, आचार्य महाशय काव्य-रचना भी करते हैं, मैं इनकी मेज पर से यह उठा लायी हूँ। सरोजिनी नायडू के सिवा ऐसी कविता मैंने और कहीं नहीं देखी।

आचार्य ने छिपी हुई निगाहों से एक बार रत्ना को देखा और झेंपते हुए बोले- यों ही कुछ लिख लिया था। मैं काव्य-रचना क्या जानूँ ?

प्रेम से दोनों विह्वल हो रहे थे। रत्ना गुणों पर मोहित थी, आचार्य उसके मोह के वशीभूत थे। अगर रत्ना उनके रास्ते में न आती तो कदाचित् वह उससे परिचित भी न होते ! किंतु प्रेम की फैली हुई बाहों का आकर्षण किस पर न होगा ? ऐसा हृदय कहाँ है, जिसे प्रेम जीत न सके ?

आचार्य महाशय बड़ी दुविधा में पड़े हुए थे। उनका दिल कहता था, जिस क्षण रत्ना पर मेरी असलियत खुल जायगी, उसी क्षण वह मुझसे सदैव के लिए मुँह फेर लेगी। वह कितनी ही उदार हो, जाति के बंधन को कितना ही कष्टमय समझती हो, किंतु उस घृणा से मुक्त नहीं हो सकती जो स्वभावतः मेरे प्रति उत्पन्न होगी। मगर इस बात को जानते हुए भी उनकी हिम्मत न पड़ती थी कि अपना वास्तविक स्वरूप खोलकर दिखा दें। आह ! यदि घृणा ही तक होती तो कोई बात न थी, मगर उसे दुःख होगा, पीड़ा होगी, उसका हृदय विदीर्ण हो जायगा, उस दशा में न जाने क्या कर बैठे। उसे इस अज्ञात दशा में रखते हुए प्रणय-पाश को दृढ़ करना उन्हें परले सिरों की नीचता प्रतीत होती थी। यह कपट है, दगा है, धूर्तता है जो प्रेमाचरण में सर्वथा निषिद्ध है। इस संकट में पड़े हुए वह कुछ निश्चय न कर सकते थे कि क्या करना चाहिए। उधर रायसाहब की आमदोरफ्त दिनोंदिन बढ़ती जाती थी। उनके मन की बात एक-एक शब्द से झलकती थी। रत्ना का आना-जाना बंद होता जाता था जो उनके आशय को और भी प्रकट करता था। इस प्रकार

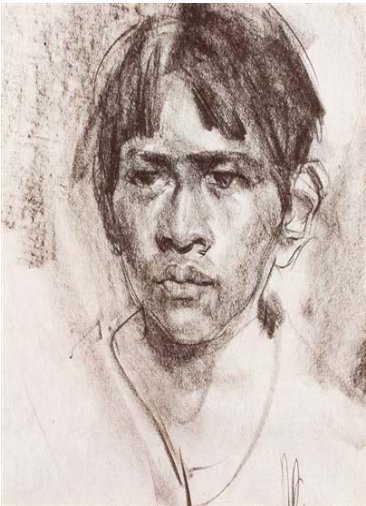
तीन-चार महीने व्यतीत हो गये। आचार्य महाशय सोचते, यह वही रायसाहब हैं, जिन्होंने केवल रत्ना की चारपाई पर जरा देर लेट रहने के लिए मुझे मारकर घर से निकाल दिया था। जब उन्हें मालूम होगा कि मैं वही अनाथ, अछूत, आश्रयहीन बालक हूँ तो उन्हें कितनी आत्मवेदना, कितनी अपमान-पीड़ा, कितनी लज्जा, कितनी दुराशा, कितना पश्चात्ताप होगा !

एक दिन रायसाहब ने कहा- विवाह की तिथि निश्चित कर लेनी चाहिए। इस लग्न में मैं इस ऋण से उच्छ्रा हो जाना चाहता हूँ।

आचार्य महाशय ने बात का मतलब समझकर भी प्रश्न किया- कैसी तिथि ?

रायसाहब- यही रत्ना के विवाह की। मैं कुंडली का तो कायल नहीं, पर विवाह तो शुभ मुहूर्त में ही होगा।

आचार्य भूमि की ओर ताकते रहे, कुछ न बोले।



रायसाहब- मेरी अवस्था तो आपको मालूम ही है। कुश-कन्या के सिवा और किसी योग्य नहीं हूँ। रत्ना के सिवा और कौन है, जिसके लिए उठा रखता।

आचार्य महाशय विचारों में मग्न थे।

रायसाहब- रत्ना को आप स्वयं जानते हैं। आपसे उसकी प्रशंसा करनी व्यर्थ है। वह अच्छी है या बुरी है, उसे आपको स्वीकार करना पड़ेगा।

आचार्य महाशय की आँखों से आँसू बह रहे थे।

रायसाहब- मुझे पूरा विश्वास है कि आपको ईश्वर ने उसी के लिए यहाँ भेजा है। मेरी ईश्वर से यही याचना है कि तुम दोनों का जीवन सुख से कटे। मेरे लिए इससे ज्यादा खुशी की और कोई बात नहीं हो सकती। इस कर्तव्य से मुक्त होकर इरादा है कुछ दिन भगवत्-भजन करूँ। गौण रूप से आप ही उस फल के भी अधिकारी होंगे।

आचार्य ने अवरुद्ध कंठ से कहा- महाशय, आप मेरे पिता तुल्य हैं, पर मैं इस योग्य कदापि नहीं हूँ।

रायसाहब ने उन्हें गले लगाते हुए कहा- बेटा, तुम सर्वगुण-सम्पन्न हो। तुम समाज के भूषण हो। मेरे लिए यह महान गौरव की बात है कि तुम-जैसा दामाद पाऊँ। मैं आज तिथि आदि ठीक करके कल आपको सूचना दूँगा।

यह कहकर रायसाहब उठ खड़े हुए। आचार्य कुछ कहना चाहते थे, पर मौका न मिला, या यों कहो हिम्मत न पड़ी। इतना मनोबल न था, घृणा सहन करने की इतनी शक्ति न थी।

विवाह हुए महीना-भर हो गया। रत्ना के आने से पतिगृह उजाला हो गया है और पति-हृदय पवित्र। सागर में कमल खिल गया। रात का समय था। आचार्य महाशय भोजन करके लेटे हुए थे, उसी पलंग पर जिसने किसी दिन उन्हें घर से निकलवाया था, जिसने उनके भाग्यचक्र को परिवर्तित कर दिया था।

महीना-भर से वह अवसर ढूँढ़ रहे हैं कि वह रहस्य रत्ना को बतला दूँ। उनका संस्कारों से दबा हुआ हृदय यह नहीं मानता कि मेरा सौभाग्य मेरे गुणों ही का अनुग्रह है।

वह अपने रुपये को भट्टी में पिघलाकर उसका मूल्य जानने की चेष्टाकर रहे हैं। किन्तु अवसर नहीं मिलता। रत्ना ज्यों ही सामने आ जाती है, वह मंत्रमुग्ध से हो जाते हैं।

बाग में रोने कौन जाता है, रोने के लिए तो अँधेरी कोठरी ही चाहिए।

इतने में रत्ना मुस्कराती हुई कमरे में आयी। दीपक की ज्योति मंद पड़ गयी।

आचार्य ने मुस्कराकर कहा- अब चिराग गुल कर दूँ न ?

रत्ना बोली- क्यों, क्या मुझसे शर्म आती है?

आचार्य- हाँ, वास्तव में शर्म आती है।

रत्ना- इसलिए कि मैंने तुम्हें जीत लिया ?

आचार्य- नहीं, इसलिए कि मैंने तुम्हें धोखा दिया।

रत्ना- तुममें धोखा देने की शक्ति नहीं है।

आचार्य- तुम नहीं जानतीं। मैंने तुम्हें बहुत बड़ा धोखा दिया है।

रत्ना- सब जानती हूँ।

आचार्य- जानती हो मैं कौन हूँ ?

रत्ना- खूब जानती हूँ। बहुत दिनों से जानती हूँ।

जब हम तुम दोनों इसी बगीचे में खेला करते थे, मैं तुमको मारती थी और तुम रोते थे, मैं तुमको अपनी जूटी मिठाइयाँ देती थी और तुम दौड़कर लेते थे, तब भी मुझे तुमसे प्रेम था; हाँ, वह दया के रूप में व्यक्त होता था।

आचार्य ने चकित हो कहा- रत्ना, यह जानकर भी तुमने ...

रत्ना- हाँ, जान कर ही। न जानती तो शायद न करती।

आचार्य- यह वही चारपाई है।

रत्ना- और मैं घाते में।

आचार्य ने उसे गले लगाकर कहा- तुम क्षमा की देवी हो।

रत्ना ने उत्तर दिया- मैं तुम्हारी चेरी हूँ।

आचार्य- रायसाहब भी जानते हैं ?

रत्ना- नहीं, उन्हें नहीं मालूम है। उनसे भूलकर भी न कहना, नहीं तो वह आत्मघात कर लेंगे।

आचार्य- वह कोड़े अभी तक याद हैं।

रत्ना- अब पिताजी के पास उसका प्रार्थश्चित्त करने के लिए कुछ नहीं रह गया। क्या अब भी तुम्हें संतोष नहीं हुआ ?

अध्यात्म आंतरिक सौंदर्य



रामकृष्ण तो काली के भक्त थे। अनूटे भक्त थे। और उस जगह पहुँच गए, जहाँ काली और वे ही बचे। लेकिन तब उनको एक बेचैनी होने लगी कि यह तो द्वैत है, और अद्वैत का अनुभव कैसे हो? अभी भी दो तो हैं ही, मैं हूँ काली है। अभी दो की दुई नहीं खोती। अभी दो तो बने ही रहते हैं। तो वे एक अद्वैत गुरु की शरण में गए। उस अद्वैत गुरु को उन्होंने कहा कि अब मैं क्या करूँ? ये दो अटक गए हैं, इसके आगे अब कोई गति नहीं होती। अब दिखाई भी नहीं पड़ता कि जाऊँ कहाँ? शांत हो जाता हूँ; काली खड़ी हो जाती है। मैं होता हूँ, काली होती है। बड़ा आनंद है। गहन अनुभव हो रहा है। लेकिन दो अभी बाकी हैं। एक आखिरी अभीप्सा मन में उठती है कि एक कैसे हो जाऊँ? तो जिस गुरु से उन्होंने कहा था, उसने कहा, फिर थोड़ी हिम्मत जुटानी पड़ेगी। और हिम्मत कठिन है और मन को चोट करने वाली है। गुरु ने कहा कि भीतर जब काली खड़ी हो, तो एक तलवार उठाकर दो टुकड़े कर देना। रामकृष्ण ने कहा कि क्या कहते हैं, तलवार उठाकर दो टुकड़े! काली के! ऐसी बात ही मत कहें! ऐसा सुनकर ही मुझे बहुत दुख और पीड़ा होती है।

तो गुरु ने कहा, तो फिर तू अद्वैत की फिफ्र छोड़ दे। क्योंकि अब काली ही बाधा है। अब तक काली ही साधक थी, साधन थी, सहयोगी थी; अब काली ही बाधा है। अब सीढ़ी छोड़नी पड़ेगी। अब तू सीढ़ी को मत पकड़। माना कि इसी सीढ़ी से तू इतनी दूर आया है, इसलिए मोह पैदा हो गया है, आसक्ति बन गई है। हमारी आसक्ति संसार में ही नहीं बनती, हमारी आसक्ति हमारी साधना के उपाय से भी बन जाती है। अब किसी जैन को कहो कि महावीर के दो टुकड़े कर दो! किसी बौद्ध को कहो कि बुद्ध के दो टुकड़े कर दो! राम के भक्त को कहो कि हटाओ, फेंक दो इस मूर्ति को मन से! बेचैनी होगी कि क्या बातें कर रहे हैं! यह कोई बात हुई धर्म की? अध्यात्म हुआ? यह तो घोर नास्तिकता हो गई। लेकिन रामकृष्ण जानते थे कि जो यह आदमी कह रहा है, वह ठीक तो कह रहा है। यह मेरी मजबूरी है कि मैं न तोड़ पाऊँ। लेकिन उस गुरु ने कहा, तू मेरे सामने बैठ और ध्यान कर। और जैसे ही काली भीतर आए, उठाना तलवार और तोड़ देना! रामकृष्ण ने कहा, लेकिन मैं तलवार कहाँ से लाऊंगा? उस गुरु ने बड़ी कीमती बात कही। उस गुरु ने कहा कि तू काली को ले आया भीतर, तलवार न ला सकेगा! काली कहाँ थी पहले? तू काली को ले आया, तो तलवार तो तेरे बाएं हाथ का खेल है। जैसे काली को तूने कल्पना से अपने भीतर विराजमान करके साकार कर लिया है, ऐसे ही उठा लेना तलवार को।

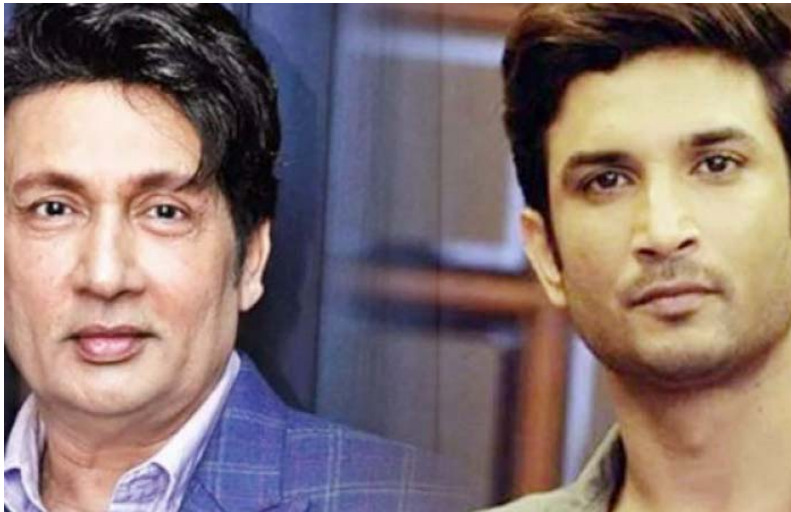
रामकृष्ण ने कहा, तलवार भी उठा लूंगा, तो तोड़ नहीं पाऊंगा। मैं भूल ही जाऊंगा। तुमको भी भूल जाऊंगा, तुम्हारी बात को भी भूल जाऊंगा। काली दिखी कि मैं तो मंत्रमुग्ध हो जाऊंगा। मैं तो नाचने लगूंगा। मैं फिर यह तलवार नहीं उठा सकूंगा। तो उस गुरु ने कहा कि फिर मैं कुछ करूंगा बाहर से। एक कांच का टुकड़ा गुरु उठा लाया और उसने रामकृष्ण को कहा कि जब मैं देखूंगा कि तू मस्त होने लगा, डोलने लगा। क्योंकि जब भीतर काली आती, तो रामकृष्ण डोलने लगते, हाथ-पैर कंपने लगते, रोएं खड़े हो जाते। और चेहरे पर एक अदभुत आनंद का भाव, मस्ती छा जाती। तो उस गुरु ने कहा कि मैं तेरे माथे पर इस कांच से काट दूंगा; जोर से लहलुहान कर दूंगा; चमड़ी को काट दूंगा। और जब मैं यहाँ तेरी चमड़ी काटू, तब तुझे खयाल अगर आ जाए, तो चूकना मत। उठाकर तलवार तू भी दो टुकड़े भीतर कर देना। और ऐसा ही किया गया। गुरु ने कांच से काट दी माथे की चमड़ी, ठीक जहाँ तृतीय नेत्र है। ऊपर से नीचे तक चमड़ी को दो टुकड़े कर दिया। खून की धार बह पड़ी। रामकृष्ण को भीतर होश आया। वे तो नाच रहे थे। मस्त हो रहे थे भीतर। होश आया। हिम्मत की और उठाकर तलवार से काली के दो टुकड़े कर दिए। रामकृष्ण, और काली के दो टुकड़े! यह भक्त की आखिरी हिम्मत है। यह आखिरी हिम्मत है। इससे बड़ी हिम्मत नहीं है जगत में। और जो इतनी हिम्मत न जुटा पाए, वह अद्वैत में प्रवेश नहीं कर पाता। काली विसर्जित हो गई। रामकृष्ण अकेले रह गए। या कहें कि चैतन्य मात्र बचा। छह दिन बाद होश में आए। आंखें खोलीं, तो जो पहले शब्द थे, वे ये थे कि कृपा गुरु की, आखिरी बाधा भी गिर गई। दि लास्ट बैरियर हैज फालेन।

रामकृष्ण के मुंह से शब्द - आखिरी बाधा, लास्ट बैरियर! सोचने में भी नहीं आता। रामकृष्ण के सामान्य भक्तों ने इस उल्लेख को अक्सर छोड़ दिया है, क्योंकि यह उल्लेख उनके पूरे जीवन की साधना के विपरीत पड़ता है। इसलिए बहुत थोड़े से भक्तों ने इसका उल्लेख किया है। बाकी भक्तों ने इसको छोड़ ही दिया है। क्योंकि यह तो मामला ऐसा हुआ कि जब उतरना ही था, तो फिर चढ़े क्यों? इतनी मेहनत की। काली के लिए रोए-गाए, नाचे-चिल्लाए, चीखे, प्यास से भरे, जीवन दांव पर लगाया। फिर काली को पा लिया। फिर दो टुकड़े किए। तो वह लिखने वाले भक्तों को बड़ा कष्टपूर्ण मालूम पड़ा है। इसलिए अधिक भक्तों ने इस उल्लेख को छोड़ ही दिया है। मगर यह उल्लेख बड़ा कीमती है। और जिनको भी भक्ति के मार्ग पर जाना है, उन्हें याद रखना है कि जिसे हम आज बना रहे हैं, उसे कल मिटा देना पड़ेगा। आखिरी छलांग, सीढ़ी से भी उतर जाने की, नाव भी छोड़ देने की, रास्ता भी छोड़ देने का, विधि भी छोड़ देने की। तो जो रामकृष्ण को हुआ है काली के दर्शन में, वह अंतिम नहीं है। अंतिम तो यह हुआ, जब काली भी खो गई। जब कोई प्रतिमा नहीं रह जाती मन में, कोई शब्द नहीं रह जाता, कोई आकार नहीं रह जाता, जब सब शब्द शून्य हो जाते हैं, सब प्रतिमाएं लीन हो जाती हैं असीम में, सब आकार निराकार में डूब जाते हैं, जब न मैं बचता हूँ न तू बचता है।

सिनेमा

सुशांत सिंह राजपूत की फाइनल पोस्टमार्टम रिपोर्ट में झोल, शेखर सुमन ने उठाए सवाल

सुशांत सिंह राजपूत की फाइनल पोस्टमार्टम रिपोर्ट पर अब सवाल उठ रहे हैं। कई लोगों ने पहले ही सुशांत के केस की सीबीआई को सौंपने की मांग कर चुके हैं। सुशांत की फाइनल पोस्टमार्टम रिपोर्ट पर बॉलीवुड एक्टर शेखर सुमन से सवाल उठाए हैं।



बॉलीवुड एक्टर सुशांत सिंह राजपूत ने 14 जून 2020 को उनके बांद्रा वाले फ्लैट पर मृत पाया गया। पुलिस ने शुरूआती जांच में इसे आत्महत्या का केस बताया था। दूसरे दिन आयी पोस्टमार्टम रिपोर्ट में भी सुशांत की मौत का कारण दम घुटना की बताया गया। सुशांत के मृत शरीर की बारीकी से जांच के लिए उनके पोस्टमार्टम की फाइनल रिपोर्ट आनी थी। अब सुशांत की फाइनल पोस्टमार्टम रिपोर्ट आ गयी है। सुशांत की पोस्टमार्टम रिपोर्ट ने उनकी हत्या किए जाने के सारे दावों को झुठला दिया है।

सुशांत कि रिपोर्ट में यह साफ है कि सुशांत की मौत का कारण दम घुटना है। फांसी लगाने के कारण उनका दम घुटा और उनका निधन हो गया। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में ये भी सामने आया है कि सुशांत के शरीर पर किसी चोट के निशान नहीं हैं उनके नाखून भी साफ थे। ऐसे में हत्या की कोई आशंका नहीं है। सुशांत को किस चीज का डिप्रेशन था पुलिस इस एंगल से जांच कर रही है।

सुशांत सिंह राजपूत की फाइनल पोस्टमार्टम रिपोर्ट पर अब सवाल उठ रहे हैं। कई लोगों ने पहले ही सुशांत के केस की सीबीआई को सौंपने की मांग कर चुके हैं। सुशांत की फाइनल पोस्टमार्टम

रिपोर्ट पर बॉलीवुड एक्टर शेखर सुमन से सवाल उठाए हैं। शेखर सुमन ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट शेयर करते हुए लिखा कि- तो यह साफ कर दिया गया है कि सुशांत सिंह राजपूत की मृत्यु में किसी का हाथ नहीं है और यह एक आत्महत्या है। इस जाल में नहीं फंसना है। मुझे शक था कि कुछ ऐसा ही होगा। यह पहले से ही तय था। इसीलिए यह फोरम महत्वपूर्ण है, हम सभी को यहां अपनी आवाज उठानी है ताकि दोबारा जांच हो।

‘हमें अपनी आवाज मुखर करनी है और आत्महत्या जैसी कहानियों में नहीं फंसना है। इस बार हम चुप नहीं रहेंगे। इस बार हम लोग नहीं मानेंगे। सुशांत के लिए इंसाफ की मांग करते रहिए।’

सुशांत के फैस और उनके जानने वालों का कहना है कि सुशांत सिंह राजपूत मानसिक रूप से इतने कमजोर नहीं थे कि वह आत्महत्या कर ले। सोशल मीडिया पर भी काफी पोस्ट शेयर करके ये दावे किए जा रहे हैं कि सुशांत ने सुसाइड नहीं की है बल्कि उनकी हत्या की गयी है। सुशांत सिंह राजपूत की मौत की सीबीआई जांच होनी चाहिए।

दुनिया को अपनी कीमत बताने के लिए इंसान को क्यों मरना पड़ता है-जरीन खान



सुशांत की मौत पर इस समय बॉलीवुड में एक लंबी बहस चल रही है। सुशांत की मौत के पीछे जहां एक तरह हत्या की साजिश बताई जा रही है तो वहीं सुशांत की मौत के बाद बॉलीवुड का एक काला सच लोगों के सामने आ गया है। सुशांत की मौत को लेकर कहा जा रहा है कि वह 6 महीने से डिप्रेशन में थे। सुशांत के डिप्रेशन का कारण था बॉलीवुड का रवैया। कहा जा रहा है कि बॉलीवुड में सुशांत के साथ ठीक बर्ताव नहीं किया गया। बड़े डायरेक्टर्स और प्रोड्यूसर ने उन्हें अपनी फिल्मों से निकाल दिया। सुशांत सिंह रातपूत एक आउटसाइडर थे जिसके वजह से उन्हें फिल्में नहीं दी जाती थी। उनके हाथ से फिल्में छीनकर स्टार किड्स के हाथ में दे दी जाती थी। सुशांत तो इस दुनिया से चले गये। उनके चले जाने के बाद दुनिया में लोग उसके बारे में लिख और बात कर रहे हैं। अब सुशांत की मौत के 10 दिन बाद सलमान खान की हीरोइन जरीन खान ने भी एक लंबा पोस्ट लिख कर इस जनता से कुछ सवाल किए हैं।

जरीन खान ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट शेयर किया है। पोस्ट में जरीन ने एक समुद्र के किनारे बैठी हुई है और आसमान अपने रंग समय के साथ-साथ बदल रहा है। इस पोस्ट के साथ उन्होंने काफी लंबा कैप्शन लिखा है। उन्होंने लिखा-इस समय मेरे दिमाग में बहुत ढेर सारे ‘क्यों’ हैं। दुनिया को अपनी कीमत बताने के लिए इंसान को क्यों मरना पड़ता है। क्यों जीवित रहने पर उनकी सराहना नहीं की जाती, जितना मरने के बाद की जाती है। क्यों लोगों को किसी के जीवन की परवाह नहीं होती है, वहीं मरने के बाद उस पर सबके विचार और राय आने शुरू हो जाते हैं। क्यों एक जीनियस/ उच्च बुद्धि वाले व्यक्ति की पहचान मानसिक रूप से बीमार/अस्थिर होने के रूप में की जा रही है। उन्होंने कहा, क्यों सोशल मीडिया आपकी खुशी और आपके दुःख की पहचान करने वाला टूल बन गया है। क्यों दुनिया इतनी क्रूर हो जाती है, क्यों किसी व्यक्ति की मौत बस एक व्यवसाय या टीआरपी बन के रह गई है। क्यों, क्यों, क्यों, आखिर क्यों।

कु शोभा

स्वास्थ्य

डायबिटीज जैसे कई रोग दूर करता है करेला



लेटिन में मोर्डिका तथा अंग्रेजी में बिटर गॉर्ड के नाम से पुकारा जाने वाला करेला बेल पर लगने वाली सब्जी है। इसका रंग हरा होता है इसकी सतह पर उभरे हुए दाने होते हैं। इसके अंदर बीज होते हैं। यह अपने स्वाद के कारण काफी प्रसिद्ध है। इसका स्वाद बहुत कड़वा होता है इसलिए प्रायः कड़ुवे (बुरे) स्वभाव वाले व्यक्ति की तुलना करेले से कर दी जाती है।

एक अच्छी सब्जी होने के साथ-साथ करेले में दिव्य औषधीय गुण भी होते हैं। यह दो प्रकार का होता है बड़ा तथा छोटा करेला। बड़ा करेला गर्मियों के मौसम में पैदा होता है जबकि छोटा करेला बरसात के मौसम में। चूंकि इसका स्वाद बहुत कड़वा होता है इसलिए अधिकांश लोग इसकी सब्जी को पसंद नहीं करते। इसके कड़वेपन को दूर

करने के लिए इसे नमक लगाकर कुछ समय तक रखा जाता है।

करेले की तासीर ठंडी होती है। यह पचने में हल्का होता है। यह शरीर में वायु को बढ़ाकर पाचन क्रिया को प्रदीप्त कर, पेट साफ करता है। प्रति 100 ग्राम करेले में लगभग 92 ग्राम नमी होती है। साथ ही इसमें लगभग 4 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 1.5 ग्राम प्रोटीन, 20 मिलीग्राम कैल्शियम, 70 मिलीग्राम फास्फोरस, 1.8 मिलीग्राम आयरन तथा बहुत थोड़ी मात्रा में वसा भी होता है। इसमें विटामिन ए तथा विटामिन सी भी होता है जिनकी मात्रा प्रति 100 ग्राम में क्रमशः 126 मिलीग्राम तथा 88 मिलीग्राम होती है।

नमी अधिक तथा वसा कम मात्रा में होने

के कारण यह गर्मियों के लिए बहुत अच्छा है।

इसके प्रयोग से त्वचा साफ होती है और किसी प्रकार के फोड़े-फुन्सी नहीं होते। यह भूख बढ़ाता है, मल को शरीर से बाहर निकालता है। मूत्र मार्ग को भी यह साफ रखता है। इसमें विटामिन ए अधिक होने के कारण यह आंखों की रोशनी के लिए बहुत अच्छा होता है। रतौंधी होने पर इसके पत्तों के रस का लेप थोड़ी सी काली मिर्च मिलाकर लगाना चाहिए। इस रोग के कारण रोगी को रात में कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता। विटामिन सी की अधिकता के कारण यह शरीर में नमी बनाए रखता है और बुखार होने की स्थिति में बहुत लाभकारी होता है। करेले की सब्जी खाने से कभी कब्ज नहीं होती यदि किसी व्यक्ति

को पहले से कब्ज हो तो वह भी दूर ही जाती है। इससे एसीडिटी, छाती में जलन और खट्टी डकारों की शिकायत भी दूर हो जाती है।

बढ़े हुए यकृत, प्लीहा तथा मलेरिया बुखार में यह बहुत फायदेमंद सिद्ध होता है। इसके लिए रोगी को करेले के पत्तों या कच्चे करेले को पीसकर पानी में मिलाकर पिलाया जाता है। यह इस दिन में कम से कम तीन बार पिलाना चाहिए। कच्चा करेला पीसकर पिलाने से पीलिया भी ठीक हो जाता है। रस निकालने से पहले पत्तों या करेले को ठीक से रगड़कर धोना जरूरी होता है क्योंकि आजकल फल सब्जियों को रोगों तथा कीड़ों से बचाने के लिए अनेक रसायन छिड़के जाते हैं जो हमारे शरीर के लिए हानिकारक होते हैं। जोड़ों के दर्द तथा गठिया रोग में करेले की सब्जी बिना कड़वापन दूर किए दिन में तीनों समय अर्थात् सुबह नाश्ते में और फिर दोपहर तथा रात्रि के भोजन में खाई जानी चाहिए। फोड़े-फुन्सी तथा रक्त विकार में करेले का रस लाभकारी होता है। इन पर करेले के पत्तों का लेप भी किया जा सकता है। करेले का रस निकालते समय यह ध्यान रखें कि यह बहुत ज्यादा पतला न हो और उसे साफ बर्तन में निकाला जाए।

त्वचीय रोग, कुष्ठ रोग तथा बवासीर में करेले को मिक्सी में पीसकर प्रभावित स्थान पर हल्के-हल्के हाथों से लेप लगाना चाहिए। यह लेप नियमित रूप से रात को सोने से पहले लगाएं। जब तक इच्छित

लाभ न हो लेप लगाना जारी रखना चाहिए। करेले के रस की एक चम्मच मात्रा में शक्कर मिलाकर पीने से खूनी बवासीर में लाभ होता है। यह शरीर में उत्पन्न टॉक्सिन्स तथा उपस्थित अनावश्यक वसा को दूर करता है अतः यह मोटापा दूर करने में भी विशेष रूप से सहायक होता है। जिस स्त्री को मासिक स्राव बहुत कठिन तथा दर्द भरा हो तो उसे भी करेले के रस का सेवन करना चाहिए। इसका सेवन गर्भवती स्त्रियों में दूध की मात्रा भी बढ़ाता है।

यह शारीरिक दाह को भी दूर करता है। शरीर के जिस अंग में जलन हो वहां करेले के पत्तों का रस मलना चाहिए। अपनी शीतल प्रकृति के कारण यह तुरन्त लाभ पहुंचाता है। मधुमेह के रोगियों के लिए करेला एक वरदान है। उन्हें करेले का सेवन अधिक करना चाहिए। बिना कड़वापन दूर किए करेले की सब्जी तथा इसके पत्तों या कच्चे करेले का रस पूरी गर्मियों में लगातार सुबह-शाम नियमित रूप से लेने पर रक्त में शर्करा का स्तर काफी कम हो जाता है।

करेले का रस पेट के कीड़ों को भी दूर कर देता है। आयरन (लौह तत्व) की अधिकता के कारण करेला एनीमिया (रक्ताल्पता) को भी दूर करता है। करेले का रस तीनों दोषों अर्थात् वात पित्त और कफ दोष का नाश करता है। स्माल पॉक्स, चिकन पॉक्स तथा खसरे जैसे रोगों में करेले को उबाल कर रोगी को खिलाया जाता है।

सोनिया का सरकार से सवाल, जब घुसपैठ नहीं हुई तो 20 जवानों की जान कैसे और क्यों गई?

नई दिल्ली—कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने लद्दाख में चीनी सेना की घुसपैठ को लेकर शुक्रवार को कहा कि आज जब सीमा पर संकट की स्थिति है तो ऐसे समय सरकार अपनी जिम्मेदारी से पीछे नहीं हट सकती। उन्होंने यह सवाल भी किया जब चीन की सेना भारत की भूभागीय अखंडता का उल्लंघन कर रही है तो क्या ऐसी स्थिति में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी देश को विश्वास में लेंगे? सोनिया ने गलवान घाटी में शहीद हुए 20 जवानों के सम्मान में कांग्रेस की ओर से 'शहीदों को सलाम दिवस' मनाए जाने के मौके पर एक वीडियो संदेश में यह भी कहा कि कांग्रेस भारतीय सेना और सैनिकों के साथ मजबूती से खड़ी है।

उन्होंने कहा, "सैनिकों के शौर्य को नमन करने के लिए पूरे देश में कांग्रेसजन और देश के नागरिक 'शहीदों को सलाम दिवस' मना रहे हैं। मैं खुद को उनके साथ जोड़ती हूँ।"

कांग्रेस की शीर्ष नेता ने कहा, "लद्दाख की गलवान घाटी में चीनी घुसपैठ को रोकते हुए हमारे 20 सैनिक वीरगति को प्राप्त हुए। देश



चीन के सैनिकों द्वारा लद्दाख इलाके में कज्जा की गई हमारी सरजमीं को मोदी सरकार कैसे और कब वापस लेगी? ज़्या चीन द्वारा गलवान घाटी और पेगोंग सो इलाके में नए निर्माण और नए बंकर बनाकर हमारी भूभागीय अखंडता का उल्लंघन किया जा रहा है? ज़्या प्रधानमंत्री इस विषय पर देश को विश्वास में लेंगे?

उनके बलिदान के लिए सदैव आभारी रहेगा। हमें हमारे सैनिकों और सेना पर नाज है। देश सुरक्षित है क्योंकि हमारी सेना प्राणों की आहुति देकर भी देश की हिफाजत करती है।" उन्होंने कहा कि कांग्रेस हमारी सेना और सैनिकों के प्रति आदरभाव प्रकट करते हुए मजबूती के साथ खड़े रहने के संकल्प को दोहराती है। सोनिया

ने कहा, "आज जब भारत चीन सीमा पर संकट की स्थिति है तो केन्द्र सरकार अपनी जिम्मेदारी से पीछे नहीं हट सकती।" सोनिया ने कहा कि प्रधानमंत्री कहते हैं कि हमारी सीमा में कोई घुसपैठ नहीं हुई, लेकिन दूसरी तरफ रक्षा मंत्री और विदेश मंत्रालय बड़ी संख्या में चीनी सैनिकों की मौजूदगी और अनेकों बार चीनी

घुसपैठ की चर्चा करते हैं। हमारी फौज के जनरल, रक्षा विशेषज्ञ और समाचार पत्र उपग्रह से ली गई तस्वीरें दिखाकर चीनी घुसपैठ की पुष्टि कर रहे हैं।

कांग्रेस अध्यक्ष ने सवाल किया, "आज जब हम शहीदों को नमन कर रहे हैं तो देश जानना चाहता है कि अगर चीन ने लद्दाख में हमारी सरजमीं पर कब्जा नहीं किया तो फिर हमारे 20 सैनिकों की शहादत क्यों और कैसे हुई?" उन्होंने यह भी पूछा, "चीन के सैनिकों द्वारा लद्दाख इलाके में कब्जा की गई हमारी सरजमीं को मोदी सरकार कैसे और कब वापस लेगी? क्या चीन द्वारा गलवान घाटी और पेगोंग सो इलाके में नए निर्माण और नए बंकर बनाकर हमारी भूभागीय अखंडता का उल्लंघन किया जा रहा है? क्या प्रधानमंत्री इस विषय पर देश को विश्वास में लेंगे?" कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा, "आज पूरा देश सेना और सैनिकों के साथ खड़ा है। सरकार को चाहिए कि वह भारतीय सेना को पूरा सहयोग, समर्थन और ताकत दे। यही सच्ची देशभक्ति है।

शिव भोजन योजना से एक करोड़ से ज्यादा लोगों को फायदा पहुंचा-उद्धव



मुंबई—महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने मंगलवार को कहा कि राज्य सरकार की 'शिव भोजन' थाली योजना से अब तक एक करोड़ से ज्यादा लोगों का फायदा पहुंचा है। यह योजना इस साल जनवरी में शुरू हुई थी और इसमें 10 रुपये में गरीबों को खाना उपलब्ध कराया जा रहा है। ठाकरे ने एक बयान में कहा कि कोरोना वायरस संक्रमण के मद्देनजर लागू लॉकडाउन (बंद) को देखते हुए छात्रों, बेघर लोगों और फंसे मजदूरों को पांच रुपये में थाली दी गई और कई आम नागरिक भी इस योजना से लाभान्वित हुए।

उन्होंने कहा कि राज्य में 848 शिव भोजन केंद्र हैं और तालुका स्तर पर भी इस योजना को लागू किया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा, "इस योजना की शुरुआत 26 जनवरी को गरीबों और वंचितों को लाभान्वित करने के लक्ष्य से की गई थी और अब तक 1,00,00,870 थालियां लोगों को परोसी जा चुकी हैं। यह योजना गरीबों के लिए वरदान साबित हो रही है।

राजीव गांधी फाउंडेशन को चीन से मिले तीन लाख अमेरिकी डॉलर-नड्डा

नई दिल्ली—भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने बृहस्पतिवार को आरोप लगाया कि 2005-06 में राजीव गांधी फाउंडेशन को चीन से तीन लाख अमेरिकी डॉलर की राशि मिली थी।

पार्टी अध्यक्ष ने कहा कि कांग्रेस को यह बताना चाहिए कि इतनी मोटी रकम किस बात के लिए राजीव गांधी फाउंडेशन को मिली थी? इस

फाउंडेशन की अध्यक्ष कांग्रेस नेता सोनिया गांधी हैं तथा पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह और पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी इसके



सदस्य हैं।

नड्डा ने ये गंभीर आरोप मध्य प्रदेश जनसंवाद नाम से आयोजित एक डिजिटल रैली को दिल्ली से संबोधित करते हुए लगाए। इस रैली को मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने भी संबोधित किया। रैली में नड्डा ने हालांकि अपने भाषण के दौरान कहा था

कि फाउंडेशन को तीन हजार सौ अमेरिकी डॉलर मिले। एक मौके पर उन्होंने यह भी कहा कि फाउंडेशन को तीन सौ हजार करोड़

अमेरिकी डॉलर मिले। लेकिन बाद में भाजपा अध्यक्ष के कार्यालय ने स्पष्ट किया कि नड्डा ने जिस राशि का उल्लेख अपने भाषण में किया था वह तीन लाख अमेरिकी डॉलर है। रैली में नड्डा ने मुख्य विपक्षी पार्टी को निशाने पर लेते हुए कहा, मुझे आश्चर्य होता है कि राजीव गांधी फाउंडेशन को 2005-06 में पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना और चीनी दूतावास ने तीन लाख यूएस डॉलर क्यों दिए? नड्डा ने कहा कि विपक्ष के लोग विरोध के नाम पर किस तरीके से दोस्ती निभाते हैं, यह इसका एक उदाहरण है। भाजपा अध्यक्ष ने कहा, देश जानना चाहता है कि राजीव गांधी फाउंडेशन को तीन लाख अमेरिकी डॉलर किस लिए दिए गए थे? एक परिवार की गलतियों के कारण 43 हजार वर्ग किलोमीटर हमारी भूमि चली गई। चीन से ये फंड लेते हैं और उसके बाद वो स्टडी कराते हैं, जो देश के हित में नहीं है और ये उसके लिए वातावरण तैयार करते हैं। उन्होंने कहा कि लोगों को अपने पक्ष में करने के बहुत से तरीके होते हैं। उन्होंने कहा, आज चीन के खिलाफ ऐसे खड़े हैं जैसे इनके बराबर का कोई दूसरा प्रहरी ही नहीं हो।

सभी नियमित ट्रेन सेवाएं 12 अगस्त तक रद्द रहेंगी-रेलवे

नई दिल्ली—रेलवे बोर्ड ने हा कि सभी नियमित मेल, एक्सप्रेस और यात्री ट्रेन सेवाओं के साथ उपनगरीय ट्रेनें 12 अगस्त तक रद्द रहेंगी। सूत्रों ने बताया कि देश में कोरोना वायरस के बढ़ते मामलों को देखते हुए यह फैसला किया गया है।

इसी प्रकार सभी स्पेशल ट्रेनें चलती रहेंगी। इसके तहत 12 मई से राजधानी के मार्ग पर चल रही 12 जोड़ी ट्रेनें तथा एक जून से चल रही 100 जोड़ी ट्रेनें जारी रहेंगी। जरूरी सेवाओं में लगे कर्मियों की आवाजाही के लिए हाल में मुंबई में सीमित तौर पर शुरू की गयी विशेष उपनगरीय सेवा भी जारी रहेगी।

चीन मुद्दे पर हम मोदी सरकार के साथ-मायावती

लखनऊ—बसपा सुप्रीमो मायावती ने केन्द्र और राज्य की भाजपा सरकारों पर निशाना साधते हुए कहा है कि चीन मुद्दे से भारत को नुकसान हो रहा है। इससे देश के आंतरिक मुद्दे दब रहे हैं। मायावती ने कहा पेट्रोल-डीजल के दाम बढ़ रहे हैं, यह सबसे बड़ा मुद्दा होना चाहिए। जनता एक तरफ कोरोना से परेशान है, अब महंगाई की मार भी उसे झेलनी पड़ रही है।

मायावती ने कहा कि चीन मुद्दे पर हम केन्द्र की मोदी सरकार के साथ खड़े हैं। उन्होंने दूसरी परटियों से भी कहा कि किसी तरह की बेहूदी बात ना करें। आपसी विवाद से चीन को फायदा मिलेगा। मिलकर चुनाव लड़ना अलग चीज है। मिलकर सरकार बनाना अलग चीज है। मायावती ने केन्द्र सरकार से मांग की कि वह पेट्रोल और डीजल की कीमतें नियंत्रित करे।

गरीब को लाभ नहीं पहुंचा है। उन्होंने कहा कि सिर्फ प्रचार करने से काम नहीं चलेगा। बसपा सुप्रीमो ने कहा, "सिर्फ योजनाएं लॉन्च की जा रही हैं। योजनाओं की निगरानी करना जरूरी है। अपने-अपने

लोगों को लाभ मिल रहा है। गरीब, जरूरतमंद को लाभ मिलना चाहिए।" मायावती ने इन सब बातों पर सरकार से ध्यान देने के लिए कहा है। उन्होंने कहा कांग्रेस- भाजपा सभी राजनीति कर रहीं। ये परटियां बीएसपी पर आरोप लगाती हैं।

बीएसपी किसी पार्टी के हाथ का खिलौना नहीं। भाजपा कहती है "कांग्रेस के हाथ का खिलौना है। कांग्रेस कहती है 'एनडीए बीजेपी के हाथ का खिलौना है। ये लोग बेहूदी बातें करते हैं। हम किसी पाटा के प्रवक्ता नहीं हैं, बाबा साहेब मूवमेंट की प्रवक्ता हैं।"

कांग्रेस पर तीखा हमला करते हुए मायावती ने कहा, "बीएसपी कांग्रेस के चलते बनी है। आजादी के बाद कांग्रेस ने काम नहीं किया। कांग्रेस की गलत नीतियों के खिलाफ बसपा बनी। कांग्रेस के रहते लोगों ने पलायन किया। कांग्रेस रोजगार देती तो कोई कहीं नहीं जाता। कांग्रेस अपनी नीतियों के कारण सत्ता से गई।" मायावती ने भाजपा को संदेश दिया कि वह कांग्रेस से सबक सीखे। मायावती ने कहा, "भाजपा सुनिश्चित करे कि योजनाओं का लाभ लोगों को मिले।"

कनिष्ठ वाणिज्यिक कर अधिकारी रिश्तत मामले में गिरफ्तार

जयपुर—भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो के एक दल ने अनूपगढ़ के कनिष्ठ वाणिज्यिक कर अधिकारी को व्यापारी से दस हजार रुपये की कथित रित राशि लेते हुए गिरफ्तार किया है। ब्यूरो के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक राजेंद्र ढिढ़ारिया ने बताया कि आरोपी कनिष्ठ वाणिज्यिक कर अधिकारी पवन कुमार ने परिवारी व्यापारी प्रेम कुमार से जीएसटी रिटर्न नहीं भरने पर जुर्माने का भय दिखाते हुए 25

हजार रुपये की रित मांगी थी। उन्होंने बताया कि आरोपी ने परिवारी से 15 हजार रुपये पहले ले लिये थे। उन्होंने बताया कि आरोपी अधिकारी पवन कुमार को अनूपगढ़ स्थित कार्यालय से एक दिन पश्चात शेष राशि दस हजार रुपये लेते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार किया गया। आरोपी के खिलाफ भ्रष्टाचार निरोधक अधिनियम के तहत मामला दर्ज करके जांच की जा रही है

फेयर एंड लवली से फेयर शब्द हटाएगी हिंदुस्तान यूनिलीवर

नई दिल्ली—तेल, साबुन, सर्फ जैसे रोजमर्रा की जरूरत का सामान बनाने वाली कंपनी हिंदुस्तान यूनिलीवर ने कहा कि वह त्वचा की देखभाल से जुड़े अपने लोकप्रिय ब्रांड फेयर एंड लवली से फेयर शब्द हटाएगी। कंपनी ने कहा कि त्वचा देखभाल से जुड़े उसके दूसरे उत्पादों के मामले में भी नया समग्र दृष्टिकोण अपनाया जाएगा जिसमें हर रंग-रूप का ख्याल रखा जाएगा।

हिंदुस्तान यूनिलीवर लि. एचयूएला ने एक बयान में कहा, कंपनी ब्रांड को आगे सुदंरता के दृष्टिकोण से और समावेशी बनाने के लिये कदम उठा रही है। इसके तहत कंपनी अपने ब्रांड फेयर एंड लवली से फेयर शब्द हटाएगी।

नये नाम के लिये नियामकीय मंजूरी की प्रतीक्षा है। हम अगले कुछ महीनों में नाम में बदलाव की उम्मीद कर रहे हैं।

कंपनी इस बदलाव के तहत फेयर एंड लवली फाउंडेशन के लिये भी नये नाम की घोषणा करेगी। इस फाउंडेशन का गठन 2003 में महिलाओं को उनकी शिक्षा-दीक्षा पूरी करने में मदद के लिये वजीफा देने के इरादे से किया गया था।

एचयूएल के चेयरमैन और प्रबंध निदेशक संजीव मेहता ने कहा, फेयर एंड लवली में बदलाव के अलावा एचयूएल के त्वचा देखभाल से जुड़े अन्य उत्पादों में भी सकारात्मक खूबसूरती का नया दृष्टिकोण प्रतिबिंबित होगा। उन्होंने कहा कि 2019 में हमने फेयर एंड लवली से दो चेहरों वाली तस्वीर हटाते हुए अन्य बदलाव किये थे। साथ ही हमने ब्रांड कम्युनिकेशन के लिये फेयरनेस की जगह ग्लो का उपयोग किया जो स्वस्थ त्वचा के आकलन के लिहाज ज्यादा समावेशी है।